मार्च-अप्रैल 2018

संक्षेप

साहित्य अकादेमी की द्विमासिक समाचार पत्रिका

सचिव की कलम से...

भारतीय संस्कृति में प्रत्येक कार्य को उत्सव की तरह मनाने की परंपरा है। यानी प्रत्येक आयोजन का अभिप्राय एक महत्त्वपूर्ण उत्सव की तरह है। इसी परंपरा को ध्यान में रखते हुए साहित्य अकादेमी ने अपना 64वाँ स्थापना दिवस समारोहपर्वूक मनाया। इस विशेष अवसर पर विभिन्न भारतीय भाषाओं के कृती व्यक्तित्वों का समादर के साथ स्मरण किया गया जिससे कि उन प्रसिद्ध संस्कृतिकर्मी साहित्य-विभूतियों के जीवन और उनके कार्यों से प्रेरणा प्राप्त किसी भी मतभेद को दूर किया जा सके और सभी भाषाएँ और उनके साहित्य की आंतरिक एकता प्रकट हो सके। अपनी स्थापना के आरंभिक समय से ही साहित्य अकादेमी कुशल कथाकारों, प्रसिद्ध कवियों और प्रबुद्ध विद्वानों के सम्मिलन का केंद्र रही है। साहित्य अकादेमी के दिल्ली स्थित कार्यालय में प्रख्यात सांस्कृतिक चिंतक एवं विद्वान डॉ. कर्ण सिंह ने स्थापना दिवस समारोह को गरिमा प्रदान की। उन्होंने अपने विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान के माध्यम से भारतीय मनीषा में प्रतिष्ठित ज्ञान के चार स्तंभों के विषय में विस्तार से बताया। अकादेमी के सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में स्थापना दिवस के अवसर पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए। अकादेमी के बेंगळूरु क्षेत्रीय कार्यालय में कन्नड के प्रख्यात साहित्यकार एवं विद्वान डॉ. एच.एस. वेंकटेशमूर्ति ने अपना व्याख्यान दिया।

अकादेमी ने पहली बार ‘पूर्वोत्तरी और दक्षिणी लेखिका सम्मिलन का आयोजन किया जिसका उद्देश्य था कि देश के दो ध्रुवों की साहित्यिक धाराओं के एकात्म को प्रदर्शित किया जा सके। यह अपनी तरह का एक दुर्लभ अवसर था जहाँ साहित्य को सूक्ष्म विशेषताओं और संस्कृति के विभिन्न आयामों को स्त्री दृष्टि से प्रस्तुत किया गया। यह देखा गया कि मतवैविध्य के बावजूद स्त्रीवादी चिंतन और साहित्य की विचारधारा एक है, और सबल तथा स-तर्क है। मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि ‘अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस’ के अवसर पर अकादेमी के दिल्ली में स्थित कार्यालय में एक परिसंवाद तथा बेंगळूरु कार्यालय में ‘नारी चेतना’ कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य स्त्रियों के समक्ष आज के समय में उपस्थित चुनौतियों और उनके संघर्षों को रेखांकित करना था।

साहित्य अकादेमी ने पहली बार कोहिमा में राष्ट्रीय स्तर पर एक लेखक सम्मिलन का आयोजन किया गया जिसका उद्देश्य था नागालैंड की भाषाओं और उनके साहित्य का शेष भारत से परिचय प्रगाढ़ करवाना। इस कार्यक्रम में साहित्यिक संवाद और विचार-विनिमय के लिए विभिन्न भारतीय भाषाओं के लेखकों ने देश के अलग-अलग क्षेत्रों से आकर सहभागिता की।

हमने स्वच्छता पखवाड़ा के अवसर पर स्वच्छता के मुद्दों पर अकादेमी के सभी कार्यालयों में आयोजन किए।

साहित्य अकादेमी ने अपना सर्वोच्च सम्मान मानद महत्तर सदस्यता प्रसिद्ध कोरियन भारतविद्याविद् कवयित्री एवं अनुवादिका डॉ. किम यांग-शिक को प्रदान की। इसके साथ ही अनेक प्रसिद्ध साहित्यकारों की जन्मशताब्दी के अवसर पर विभिन्न संगोष्ठियों और परिसंवादों के कार्यक्रम आयोजित किए गए। साहित्य अकादेमी साहित्य के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से देश के कोने-कोने में व्यापक रूप से आयोजन करने के लिए प्रतिबद्ध है। हमें विश्वास है साहित्य अकादेमी के शुभचिंतकों और साहित्यप्रेमियों का सहयोग और अमूल्य मार्गदर्शन हमें प्राप्त होता रहेगा।

शुभकामनाओं के साथ,

– के. श्रीनिवासराव

स्थापना दिवस व्याख्यान

12 मार्च 2018, नई दिल्ली

कर्ण सिंह स्थापना दिवस व्याख्यान देते हुए

साहित्य अकादेमी के 64वें स्थापना दिवस पर अपना व्याख्यान देते हुए प्रसिद्ध शिक्षाविद्, लेखक, विचारक एवं राजनीतिज्ञ कर्ण सिंह ने कहा कि ये दुनिया ज्ञान, कर्म, सहजीवन और आत्म योग से बची रह पाएगी। उन्होंने 'ज्ञान के चार स्तंभ' विषयक अपने व्याख्यान में कहा कि ज्ञान यानी शिक्षा व्यवस्था, जो कि हमारी परंपरा में संवाद के आधार पर स्थापित थी, आज संवादहीन हो गई है। उन्होंने वेद, उपनिषद्, गीता, बौद्ध एवं जैन ग्रंथों के उदाहरण देकर बताया कि हमारी शिक्षा हमेशा से संवाद की बुनियाद पर केंद्रित रही है। लेकिन इधर यह परंपरा ख़त्म-सी होती जा रही है और यह पूरी तरह से अंक पाने या खास तरह की नौकरियाँ पाने का साधनमात्र बनकर रह गई हैं। ज्ञान के दूसरे स्तंभ यानी कर्मयोग के बारे में स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि हमारा काम के प्रति एक सार्थक नज़रिया होना चाहिए; तथा हमें किसी भी काम को छोटा नहीं समझना चाहिए। हर काम अपनी जगह सार्थक और आवश्यक है। ज्ञान के तीसरे स्तंभ के रूप में उन्होंने सहजीवन को रेखांकित किया। उन्होंने भारत की वैविध्यपूर्ण सभ्यता-संस्कृति को संदर्भित करते हुए कहा कि यही भारत की पहचान और ताक़त है। उन्होंने सहजीवन के लिए पाँच प्रमुख मूल्यों पर बात की– पारिवारिक, सामाजिक, अंतर्फलकीय, पारिस्थितिकीय एवं भूमंडलीय। ज्ञान के चौथे स्तंभ के रूप में उन्होंने आत्मयोग की चर्चा करते हुए कहा कि स्वयं पर विश्वास विकास का प्रमुख चरण है और सभी महत्त्वपूर्ण धर्मों में इस पर व्यापक विमर्श हुआ है। कार्यक्रम के अंत में उन्होंने श्रोताओं की जिज्ञासाओं के समुचित समाधान भी प्रस्तुत किए। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि 'सेकुलर' शब्द को अनेक तरह से परिभाषित किया गया है, लेकिन भारतीय दर्शन की परंपरा में इसकी परिभाषा 'सर्वधर्मसमभाव' ही है। आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए कर्ण सिंह का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया तथा साहित्य अकादेमी की गतिविधियों एवं उपलब्धियों को रेखांकित किया। साहित्य अकादेमी को लेखकों का घर बताते हुए उन्होंने कहा कि लेखकों के व्यापक एवं सशक्त सहयोग के कारण ही अकादेमी निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

मानद महत्तर सदस्यता अर्पण

14 मार्च 2018, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने कोरियाई कवयित्री, निबंधकार एवं भारतविद् किम यांग-शिक को 14 मार्च 2018 को साहित्य अकादेमी के सभाकक्ष में मानद महत्तर सदस्यता प्रदान की। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने डॉ. किम एवं विद्वानों का स्वागत करते हुए भारत और कोरिया के बीच के प्राचीन और समृद्ध सांस्कृतिक संबंधों पर तथा इन दोनों देशों के साहित्यिक आदान-प्रदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि साहित्य अकादेमी किम यांग-शिक को मानद महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए गर्व का अनुभव कर रही है। कार्यक्रम में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सम्मान-पत्र पढ़ा तथा साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने किम यांग-शिक को मानद महत्तर सदस्यता प्रदान की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में माधव कौशिक ने कहा कि डॉ. किम यांग-शिक के समर्पित प्रयासों से दोनों देशों की सांस्कृतिक और साहित्यिक परंपरा एक-दूसरे के क़रीब आई है। उन्होंने यह भी कहा कि किम यांग-शिक सिर्फ़ दक्षिण कोरिया की सांस्कृतिक दूत ही नहीं बल्कि भारत की भी हैं। उन्होंने डॉ. किम के कार्यों की सार्वभौमिकता पर प्रकाश डाला और कहा कि उनकी मानवता और मानविक मूल्य उनके कार्यों से भी बढ़कर हैं।

अपने स्वीकृति वक्तव्य में किम यांग-शिक ने इस सम्मान के लिए अकादेमी को धन्यवाद दिया और अपने प्रारंभिक जीवन

किम यांग-शिक को मानद महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव (बाएँ) तथा उपाध्यक्ष माधव कौशिक (दाएँ)

के बारे में बात की कि कैसे वह लेखिका बनीं और उनके देश के साहित्यिक परिदृश्यों का प्रभाव उनके लेखन पर पड़ा। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे रवींद्रनाथ ठाकुर का प्रभाव न केवल कोरिया के लेखकों बल्कि वहाँ के आम लोगों पर भी पड़ा। उन्होंने यह भी विस्तारपूर्वक बताया कि रवींद्रनाथ ठाकुर की रचनाओं ने दोनों देशों के बीच के साहित्यिक विनिमय के रास्ते खोल दिए, ख़ासकर दार्शनिक और आध्यात्मिक परंपरा के आदान-प्रदान के। अपने अभिनंदन भाषण में दिविक रमेश ने किम यांग-शिक के एक कवि एवं अनुवादक के रूप में भारत, भारतीय संस्कृति एवं साहित्यिक परंपरा के लिए, अपनी संपूर्ण कृतियों के विस्तार के जज़्बे, कोरियाई चेतना में उनका स्थान, उनकी अद्वितीय क्षमता पर तथा एक सांस्कृतिक दूत के रूप में निःस्वार्थ सेवा पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। उन्होंने यह कहते हुए अपने वक्तव्य का समापन किया कि किम यांग-शिक उन विरले लेखकों में से हैं जो भारतीय परंपरा के आध्यात्मिक सदाचार को आत्मसात किए हैं तथा वे कोरियाई संवेदनशीलता को सन्निहित कर पाने में सफल रही हैं।

संगोष्ठी

आदिवासी एवं वाचिक साहित्य वर्तमान परिदृश्य

22-23 मार्च 2018, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने 'आदिवासी एवं वाचिक साहित्य : वर्तमान परिदृश्य' विषय पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 22-23 मार्च 2018 को नई दिल्ली में किया। संगोष्ठी का उद्घाटन ओड़िशा के प्रख्यात कवि एवं लेखक हलधर नाग ने किया। उन्होंने अपने बचपन के संघर्षमय दिनों को याद करते हुए अपनी लेखन-यात्रा के बारे में बताया। ज्ञात हो कि बहुत कम स्कूली शिक्षा प्राप्त हलधर नाग अपने लोक गीतों और उनके गायन के

साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव, हलधर नाग, सुशांत कुमार मिश्र, अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार, उपाध्यक्ष माधव कौशिक एवं सुबोध सरकार (बाएँ से दाएँ)

कारण पूरे देश में लोकप्रिय हैं। उन्होंने सस्वर कुछ लोक गीतों और कुछ अपनी कविताओं का भी पाठ किया।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि आधुनिक शिक्षा और शोध के क्षेत्र में आदिवासियों को जिस प्रकार प्रस्तुत किया जा रहा है, उस पद्धति से मैं असहमत हूँ। आदिवासी सभ्यता मुख्यतः फ़ैशन आदि के प्रतीकों में ही प्रयुक्त हो रही है और उनके बुनियादी विकास के लिए कोई ठोस कार्य नहीं किया जा रहा है। उन्हें मुख्यधारा में सम्मान के साथ शामिल करने की ज़रूरत है।

समाहार वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि वाचिक साहित्य पूरी भारतीय सभ्यता और संस्कृति का साहित्य है और इसमें देश की माटी की महक है। यह महक इन धरतीपुत्रों के कारण ही संभव है। वे मानवीय संवेदनाओं और प्रकृति के सच्चे संरक्षक हैं। उनका साहित्य सौंदर्य-दृष्टि से तथाकथित आधुनिक मानकों पर भले खरा न उतरता हो परंतु वह सबसे शुद्ध और सच्चा सौंदर्य है। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि वाचिक साहित्य हज़ारों वर्षों से उपलब्ध है और सदियों से आदिवासियों के बीच नैतिक और पर्यावरण शिक्षा का प्रमुख स्रोत भी रहा है। उन्होंने अकादेमी द्वारा वाचिक साहित्य के संरक्षण और संवर्धन के लिए किए जा रहे प्रयासों के बारे में विस्तार से बताया।

'आदिवासी साहित्य : वंचना, विस्थापन और सृजन के अंतर्द्वंद्व' विषयक प्रथम सत्र की अध्यक्षता महेंद्र कुमार मिश्र ने की और किरण कुमार कावथेकर, हरीराम मीणा, सुशांत कुमार मिश्र ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में महेंद्र कुमार मिश्र ने कहा कि आदिवासियों की तीन मुख्य पहचान है भूमि, भाषा एवं जीवन, जिन्हें आधुनिक समाज ने पूरी तरह से नष्ट कर दिया है। विस्थापन की मार झेल रहे आदिवासी अब भी अपनी बुनियादी ज़रूरतों के लिए संघर्ष कर रहे हैं। वे स्वदेशी उपनिवेशवाद के शिकार हो रहे हैं।

संगोष्ठी के दूसरे दिन के पहले सत्र का विषय था 'भूमंडलीकरण और आदिवासी साहित्य'। इसकी अध्यक्षता गारो की प्रतिष्ठित लेखिका कैरोलिन आर. मरक ने की तथा आलेख पाठ किया सुकसिंग लेप्चा, शांथा नाईक तथा सूरज बड़त्या ने। इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रतिष्ठित लेखिका कैरोलिन आर. मरक ने पूर्वोत्तर भारत की आदिवासी भाषाओं के बारे में विस्तारपूर्वक वर्णन करते हुए बताया कि खासी और जयंतिया को छोड़कर वहाँ की सभी आदिवासी भाषाएँ बाङ्ला भाषा से

वक्तव्य देते हुए कवि हलधर नाग

संबंध रखती हैं। उन्होंने ब्रिटिश शासन के समय और भूमंडलीकरण के मौजूदा दौर में पूर्वोत्तर भारत के आदिवासियों की संस्कृति, उनके जन-जीवन, उनके लोक गीत, कविता, नाटक की तुलना करते हुए आज के समय में लोक साहित्य में आए परिवर्तनों को भी रेखांकित किया। उन्होंने यह भी कहा कि आज आदिवासी साहित्य लुप्त होता जा रहा है, किंतु उसे पुनः सुरक्षित एवं संरक्षित किए जाने के प्रयास भी किए जा रहे हैं। इस सत्र में सुकसिंग लेप्चा ने बताया कि लेप्चा जनजातियों में पौराणिक काल से ही मौखिक कहानी सुनाने की परंपरा चली आ रही है। उन्होंने लेप्चा भाषा में अनूदित पुस्तकों तथा बाङ्ला से लेप्चा में अनूदित पुस्तकों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने यह भी कहा कि लेप्चा भाषा में गाए जाने वाले गीत लुप्त होते जा रहे हैं, लेकिन आज की युवा पीढ़ी इसे संरक्षित करने का कोई प्रयास नहीं कर रही है।

इस सत्र में चर्चित बंजारा लेखक शांथा नाईक ने 'बंजारा संस्कृति, परंपरा और उनके जनजीवन पर भूमंडलीकरण के प्रभावों' के बारे में अपने सुचिंतित आलेख में विस्तार से चर्चा की। इस सत्र के अंत में बंजारा समुदाय के प्रतिष्ठित हिंदी लेखक सूरज बड़त्या ने भी बंजारा समुदाय के जन-जीवन और संस्कृति के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि बंजारा समुदाय देश के विभिन्न क्षेत्रों में रह रहा है। वह अपने समाज के दायरे में अपने साहित्य और संस्कृति को सँभाले हुए है। लेकिन देश के विभिन्न क्षेत्रों में उसे अलग-अलग श्रेणियों में अनुसूचित किया गया है, जिसके कारण वह स्वयं अंतर्द्वंद्व के संकटों से गुज़र रहा है। यह चिंता का विषय है।

अगले सत्र का विषय था 'वाचिक साहित्य : मिथकों की सृजन परंपरा'। इस सत्र की अध्यक्षता जनजाति और लोक संस्कृति तथा साहित्य और कला के अध्येता तथा चिंतक वसंत निरगुणे ने की तथा आलेख प्रस्तुत किए सोमदत्ता मंडल, रमोना एम. संगमा तथा जयमती कश्यप ने। सोमदत्ता मंडल ने कहा कि किसी भी मौखिक साहित्य का मूल तत्त्व शब्द, उसकी बनावट, उसकी संरचना तथा उसके अर्थ में होता है। उन्होंने बताया कि रामकथा का वर्मा, इंडोनेशिया, कंबोडिया, नेपाल, थाइलैंड, मंगोलिया, श्रीलंका, चीन आदि देशों में अलग-अलग रूप देखने को मिलता है। 14वीं तथा 16वीं शताब्दी के *रामायण* में शास्त्रीय एवं लोक परंपरा दिखाई देती है। प्रत्येक समाज, क्षेत्र एवं देश की अपनी अलग संस्कृति होती है और वे उसे अपनी संस्कृति से जोड़कर अलग-अलग रूप में प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने *रामायण* के बुद्धिज़्म संस्करण तथा अमेरिकी संस्करण के बारे में बताते हुए कहा कि विश्व के कोने-कोने में रामायण के मिथक हैं—राम और सीता की कहानी को सभी देश अपनी कथा के रूप में स्वीकारते हैं। रमोना एम. संगमा ने बताया कि मेघालय के बालपकराम, चिड़ियाक आदि स्थानों में विभिन्न तरह के मिथक प्रचलित हैं, उनके बारे में चित्र के माध्यम से विस्तार से चर्चा की और यह भी कहा कि प्रत्येक मिथक का अपना एक पूर्व इतिहास होता है। गोंडी की चर्चित लेखिका जयमती कश्यप ने बस्तर क्षेत्र के मिथकों के बारे में कई लोक कथाओं के माध्यम से बताया कि कैसे ये मिथक अकाल या प्रलय के सूचक समझे जाते हैं। वसंत निरगुणे ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में मिथक को आदिमानव की रहस्यमयी भाषा माना जिसके माध्यम से आदिमानव प्रकृति और जीवन के गूढ़ रहस्यों को जानने, उन्हें खोलने की चेष्टा जीवन की शुरुआत से करता आया है। उन्होंने यह भी कहा कि आदिम पुराकथा या मिथक जीवन यथार्थ के सामूहिक अवचेतन मन के अंदर के सूक्ष्म तलों की सच्ची गहराइयों को जानने, समझने के सारभूत, सहज स्फूर्त प्रतीकात्मक उपकरण भी हैं। उन्होंने अलग-अलग जनजातियों के मिथकों की विस्तारपूर्वक चर्चा की।

कार्यक्रम का अंतिम सत्र 'वाचिक साहित्य : प्रलेखन एवं संरक्षण के प्रयास' विषय पर आधारित था। इस सत्र की अध्यक्षता भील आदिवासी लोक साहित्य के विशेषज्ञ भगवान दास पटेल ने की। उन्होंने आदिवासी लेखन के संरक्षण पर विशेष ज़ोर देते हुए कहा कि प्रलेखन और संरक्षण के लिए आदिवासियों की समृद्ध परंपरा, उनके रीति-रिवाजों, संस्कृतियों तथा उनके कथा-पात्रों के साथ उनके निजी संबंधों को गहराई से समझकर ही उनका प्रलेखन एवं संरक्षण किया जा सकता है। अपने आलेख में नीतिशा खलखो ने वाचिक साहित्य के प्रलेखन और संरक्षण के लिए किए गए और किए जा रहे विभिन्न कार्यों को विस्तार से बताया। उन्होंने संताल लोक गीतों के माध्यम से बताया कि आदिवासियों में शिक्षा, स्वास्थ्य, संबंध और सहजीवन की

कार्यक्रम में वक्तव्य देते हुए महेंद्र कुमार मिश्र

चेतना मौजूद है। उन्होंने कहा कि वाचिक साहित्य हमारे देश के विभिन्न अंचलों में बिखरा पड़ा है और इस समृद्ध विरासत को सहेजने की बहुत आवश्यकता है। इस दिशा में साहित्य अकादेमी द्वारा किए जा रहे प्रयासों के लिए उन्होंने साधुवाद भी दिया। दो दिनों की इस संगोष्ठी में साहित्यप्रेमी बड़ी संख्या में मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

परिसंवाद

हाशिये के स्वर : भारतीय दलित साहित्य

14 अप्रैल 2018, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने डॉ. बी.आर. अंबेडकर की 127वीं जन्म जयंती के अवसर पर 'हाशिये के स्वर : भारतीय दलित साहित्य' विषयक परिसंवाद 14 अप्रैल 2018 को नई दिल्ली के तृतीय तल स्थित सभाकक्ष में आयोजित किया। परिसंवाद का उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात मराठी लेखक लक्ष्मण गायकवाड ने दिया। उन्होंने कहा कि समाज में सामंजस्य स्थापित किए जाने की आवश्यकता है। जंगल, ज़मीन और पानी पर अगर दलितों का अधिकार नहीं तो उनके लिए आज़ादी का क्या मतलब है? आगे उन्होंने कहा कि अभी भी लाखों घुमंतू समुदाय के दलित लोग आज़ादी से वंचित हैं। उनको लेकर अलग-अलग मंचों से चिंताएँ तो बहुत व्यक्त की जाती हैं, लेकिन कोई ठोस बदलाव आता नहीं दिख रहा है। अभी भी हमने दलितों को अपना सहयोगी या हिस्सेदार नहीं बनाया है।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रख्यात लेखक एवं विद्वान सुभाष गाताडे थे। उन्होंने दलित साहित्य पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि इस साहित्य ने भारतीय साहित्य के मेयार बदले हैं। उन्होंने कहा कि डॉ. अंबेडकर के विचारों को महत्त्व देने की अधिक आवश्यकता है। डॉ. अंबेडकर की पहचान केवल दलित नेता के रूप में नहीं बल्कि मानवाधिकारों के लिए संघर्ष करने वाले महत्त्वपूर्ण नेता के रूप में की जानी चाहिए। उनकी समग्र मेधा को पहचानने और जानने की ज़रूरत है। उन्होंने सभी लेखकों और आलोचकों से अनुरोध किया कि डॉ. अंबेडकर की कोई एक छवि गढ़ने की जगह उनके विविधतापूर्ण कार्यों को सभी के सामने प्रस्तुत करना चाहिए।

अपने बीज वक्तव्य में बजरंग बिहारी तिवारी ने कहा कि दलित साहित्य ने शिल्प की चिंता नहीं की है बल्कि उसके लिए कथ्य ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल के उन लेखकों का परिचय दिया जो जीवन के बुनियादी अधिकारों के लिए साहित्य लेखन कर रहे थे। उन्होंने दलित साहित्य के मूल चिंतन को न्याय की स्थापना के लिए प्रयासरत बताते हुए कहा कि भक्ति काल में रविदास, कबीर, दादूदयाल एवं देव आदि न्याय के पक्ष को प्रस्तुत करते हैं। बाद में निराला, नागार्जुन और मुक्तिबोध इस परंपरा को आगे बढ़ाते हैं। उन्होंने क्षोभ, विक्षोभ, आक्रोश, अनुभव, अधिकार तथा संक्षोभ के सूत्रों के माध्यम से दलित साहित्य के विभिन्न पड़ावों को व्याख्यायित किया। उन्होंने कहा कि दलित आंदोलन और साहित्य अब विचारधारा से लैस हैं। अपने अध्यक्षीय भाषण में साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि दलित विमर्श पूरी तरह हमारा स्वदेशी विमर्श है और इसको हमें गंभीरता से अपनाना होगा। उन्होंने कहा कि दलित साहित्य ने 'अनगढ़ता का नया सौंदर्यशास्त्र' रचा है जिसका मूल तत्त्व 'श्रम' है। उन्होंने कहा कि दलितों के प्रति समाज का नज़रिया बदला तो है लेकिन अभी भी उसे और बहुत बदलना है तभी हम एक आदर्श समाज की स्थापना कर पाएँगे। कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के संपादक अनुपम तिवारी ने सभी का स्वागत किया और साहित्य अकादेमी द्वारा दलित साहित्य को प्रोत्साहित करने के लिए किए जा रहे प्रयासों के बारे में बताया।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र का विषय 'वर्चस्व का विरोध : दलित संदर्भ' था जिसकी अध्यक्षता जी. लक्ष्मी नरसैया (तेलुगु) ने की और हेमलता महिश्वर (हिंदी), सरबजीत सिंह (पंजाबी) और के. अनिल (मराठी) ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र का विषय 'अंबेडकर की दृष्टि और दलित साहित्य का अभ्युदय' था। इस सत्र की अध्यक्षता उर्मिला पवार ने की और इसमें मूलचंद गौतम (हिंदी), छाया कोरेगाँवकर (मराठी) और कर्मशील भारती (हिंदी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के हिंदी संपादक अनुपम तिवारी ने किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में दलित साहित्यकार, चिंतक एवं साहित्यप्रेमियों सहित छात्र मौजूद थे।

वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक एवं मध्य में लक्ष्मण गायकवाड़ तथा अन्य विद्वान

लोक : विविध स्वर

4 मार्च 2018, वाईपिन-कोचीन

साहित्य अकादेमी ने कुदुंबी सेवा संगम के सहयोग से 4 मार्च 2018 को वाईपिन-कोचीन में 'लोक : विविध स्वर' कार्यक्रम का आयोजन किया। कुदुंबी सेवा संगम के सचिव ई. एल. अनिल कुमार ने साहित्य प्रेमियों का स्वागत किया। अखिल भारतीय कोंकणी परिषद् के सदस्य के. वी. भास्करन ने पारंपरिक फुगड्डो लोकनृत्य तथा संबंधित गीतों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि 'फुगड्डे' एक कोंकणी लोकनृत्य है जिसे कोंकणी भाषी कुदुंबी समुदाय के सदस्यों द्वारा पारंपरिक रूप से किया जाता है। गोवा और केरल में इस कला के प्रदर्शन के बीच की समानताएँ पूर्व-पुर्तगाली युग के समुदाय की सांस्कृतिक विरासत की याद दिलाती हैं। यद्यपि पर्याप्त संरक्षण की कमी के कारण यह कला धीरे-धीरे लुप्त हो रही है। इसके परंपरागत कलाकार आजीविका के लिए विभिन्न व्यवसाय कर रहे हैं। फुगड्डे की प्रस्तुति 18 नर्तकों, 2 प्रमुख गायकों तथा एक स्रोत व्यक्ति द्वारा किया जाता है। नृत्यमंडली ने पारंपरिक कोंकणी लोकगीतों की धुनों पर फुगड्डों की प्रस्तुति मल्लिकार्जुन टेम्पल सभागार, वाईपिन में की।

साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य पय्यानूर रमेश पई ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर परिसंवाद एवं कवयित्री सम्मिलन

8 मार्च 2018, नई दिल्ली

स्वागत वक्तव्य देते हुए सचिव के. श्रीनिवासराव, नासिरा शर्मा (मध्य में) एवं आमंत्रित कवयित्रियाँ

साहित्य अकादेमी द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 8 मार्च 2018 को नई दिल्ली में परिसंवाद एवं कवयित्री सम्मिलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात हिंदी लेखिका नासिरा शर्मा ने दिया। उन्होंने कहा कि महिला लेखन केवल महिलाओं द्वारा न हो बल्कि उसमें सभी की भागीदारी होनी चाहिए। हमें नई पीढ़ी तक जो भी विचार पहुँचाने हैं उनमें एक संतुलन और संजीदगी होनी चाहिए। हमें ऐसे साहित्य की रचना करनी होगी जिसमें केवल 'स्त्री-विमर्श' के नाम पर पैदा किए जा रहे संघर्ष ही शामिल न हों बल्कि जीवन के सभी संघर्ष शामिल हों। उन्होंने महिला रचनाकारों के पास कलम, संवेदना, दृष्टि और निरीक्षण शक्ति की ताक़त को महत्त्वपूर्ण बताते हुए कहा कि इसके सहारे ही वे पुरुषों की दुनिया में अपनी बराबरी का दर्जा ले पाएँगी। उन्होंने महिलाओं द्वारा प्राप्त उपलब्धियों पर कहा कि इन उपलब्धियों के साथ जो अँधेरे हमारे जीवन में आए हैं उनको भी जानने/समझने की ज़रूरत है। लैंगिक समानता के लिए पुरुषों को भी आगे आना होगा केवल महिलाएँ अकेले यह लड़ाई कभी नहीं जीत सकतीं। स्त्री स्वतंत्रता के नाम पर केवल 'बलात्कार' या 'यौन हिंसा' ही नहीं बल्कि अन्य सामाजिक विसंगतियों की तरफ़ भी ध्यान देना ज़रूरी है, नहीं तो हम नई पीढ़ी में केवल ख़ौफ़ ही पहुँचाएँगे।

बीज वक्तव्य देते हुए प्रख्यात कन्नड लेखिका कृष्णा मनवल्ली ने भूमंडलीकरण में महिलाओं की स्थिति पर अपने विचार रखे। उन्होंने भूमंडलीकरण और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाए रखने की ज़रूरत के बारे में कहा अन्यथा यहाँ स्त्री को ख़ुद बाज़ार के हाथों बिक जाने की संभावना रहेगी। वर्तमान परिदृश्य में उन्होंने महिलाओं के आर्थिक शोषण और मीडिया द्वारा उनकी ग़लत छवि प्रस्तुत करने पर भी अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने शशि देशपांडे और महाश्वेता देवी के लेखन का उदाहरण देते हुए अपने तर्क प्रस्तुत किए। इससे पहले साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में साहित्य अकादेमी द्वारा महिला लेखन के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि महिलाएँ घर के साथ-साथ देश की भी रीढ़ हैं अतः उनका हर स्तर पर सम्मान किया जाना आवश्यक है। स्थितियाँ बदली ज़रूर हैं, किंतु अभी और भी आगे जाना है।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात गुजराती लेखिका वर्षा अडालजा ने की और अरूपा पतंगिया कलिता (असमिया), साम्राज्ञी बंद्योपाध्याय (बाङ्ला), कुमुद शर्मा (हिंदी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

अपराह्न के सत्र में के. आर. मीरा की अध्यक्षता में हेमा नायक (कोंकणी), गायत्रीबाला पंडा (ओड़िया), प्रतिभा (पंजाबी) एवं सिंधु मिश्रा (सिंधी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इसके बाद ममता कालिया की अध्यक्षता में काव्य-पाठ सत्र आयोजित हुआ, जिसमें धीर्ज्यू ज्योति बसुमतारी (बोडो), उषा किरण 'किरण' (डोगरी), नीतू (अंग्रेज़ी), रुख़साना जबीं (कश्मीरी), रानी झा (मैथिली), लिंथोई निङ्थेउजम (मणिपुरी), सुमति लांडे (मराठी),

सुभद्रा बोम्ज़ोन (नेपाली), शारदा कृष्णा (राजस्थानी), रीता त्रिवेदी (संस्कृत), सुमित्रा सोरेन (संताली), शक्ति ज्योति (तमिळ), मंदारपु हेमावती (तेलुगु) तथा शहनाज़ नबी (उर्दू) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

कार्यक्रम का संचालन अनुपम तिवारी, संपादक, साहित्य अकादेमी ने किया।

नारी चेतना

8 मार्च 2018, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 8 मार्च 2018 को सायं 5.30 बजे साहित्य अकादेमी के बेंगळूरु कार्यालय के सभागार में 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन किया।

कार्यक्रम में कन्नड कवयित्री एवं लेखिका एम.आर. कमला, मलयाळम् लेखिका कला जी.के., तमिळ लेखिका अंबुसेल्वी, तथा तेलुगु लेखिका दिवाकरला राजेश्वरी ने सहभागिता की एवं प्रख्यात कन्नड लेखिका के. सरिफा ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव एस. पी. महालिंगेश्वर ने अतिथियों एवं श्रोताओं का स्वागत करते हुए अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के महत्त्व तथा भारतीय भाषाओं में स्त्री-लेखन और शिक्षा के विकास में साहित्य अकादेमी के योगदान के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि साहित्य अकादेमी महिलाओं पर केंद्रित कार्यक्रम शृंखला के अंतर्गत 'अस्मिता', 'नारी चेतना' आदि अनेक कार्यक्रमों का आयोजन करती है जिसमें लेखिकाएँ अपने लेखन को विभिन्न विधाओं में प्रस्तुत कर सकती हैं।

एम.आर. कमला ने कुछ कन्नड कविताएँ प्रस्तुत कीं। कला जी.के. ने लैंगिक समानता, महिलाओं पर हिंसा, बच्चियों, महिलाओं की सुरक्षा से संबंधित मुद्दों एवं स्त्री शोषण की बढ़ती हुई घटनाओं पर वक्तव्य दिया। उन्होंने मलयाळम् लेखिकाओं के. सरस्वती अम्मा, ललितांबिका अंतर्जनम, बालामणि अम्मा, कमला दास तथा मलयाळम् की अन्य महत्त्वपूर्ण लेखिकाओं के बारे में बताया। उन्होंने एक मलयाळम् बाल कहानी का पाठ भी किया। अंबुसेल्वी ने तमिळ कविताओं का पाठ किया। दिवाकरला राजेश्वरी ने भी कुछ तेलुगु कविताओं का पाठ किया।

के. सरिफा ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मध्यकालीन भक्त कवयित्री अंबाबाई को याद किया। उन्होंने कहा कि भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के कारण महिलाओं पर अधिक हिंसा हो रही है। स्त्री आंदोलन का इतिहास 200 वर्षों का है। पंचवर्षीय योजना से उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ। यदि सरकार सभी क्षेत्रों में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण देती है, तभी वे लाभान्वित हो सकती हैं। उन्होंने कन्नड कविताओं का भी पाठ किया।

इस कार्यक्रम में बाङ्ला की प्रख्यात लेखिका महाश्वेता देवी पर वृत्तचित्र भी प्रदर्शित किया गया जिसका निर्देशन संदीप रे ने किया है। कार्यक्रम का समापन क्षेत्रीय सचिव एस.पी. महालिंगेश्वर के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

मंचासीन लेखिकाएँ

नारी चेतना

8 मार्च 2018, मुंबई

प्रिया जामकर, जयश्री जोशी, तथा छाया कोरेगाँवकर (बाएँ से दाएँ)

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने 8 मार्च 2018 को अपने सभागार में आयोजित 'नारी चेतना' कार्यक्रम के अंतर्गत मराठी कवयित्रियों के साथ एक काव्य-संध्या का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का आयोजन अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में किया गया। प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किम्बाहुने ने अतिथियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया। जयश्री जोशी ने अपनी कविताएँ - 'बालु', 'क्षितिज', 'स्वप्न' आदि प्रस्तुत कीं। छाया कोरेगाँवकर ने अपनी प्रेम कविताएँ सस्वर गाकर सुनाईं। प्रिया जामकर ने अपनी कविताएँ - 'जंगल', 'घूँघट', 'शून्य भवताल', 'ताला' आदि प्रस्तुत कीं। सुजाता महाजन ने - 'बाई गा नाको रनदुस माझयासाथी', 'रात्रि पदातो उजेद', 'वाडल' आदि कविताएँ प्रस्तुत कीं।

कार्यक्रम के अंत में क्षेत्रीय सचिव ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

नारी चेतना

8 मार्च 2018, चेन्नै

आर. प्रेमा वक्तव्य देते हुए

साहित्य अकादेमी के चेन्नै कार्यालय द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 8 मार्च 2018 को डीआरबीसीसीसी हिंदू कॉलेज, पट्टाबिराम में 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी, चेन्नै के कार्यालय प्रभारी ए.एस. इलांगोवन ने स्वागत भाषण दिया। डीआरबीसीसीसी हिंदू कॉलेज की प्रधानाचार्य वी. लक्ष्मी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि महिलाओं में धैर्य, सहानुभूति, आत्मविश्वास और बुद्धिमत्ता जैसे कई महान गुण हैं जो न केवल उनके व्यक्तित्व को गरिमा प्रदान करते हैं बल्कि उनके सशक्तिकरण में भी सहायक सिद्ध होते हैं। वैगेई सेल्वी ने कहा कि महिलाओं को किसी भी समस्या को समझने में असमर्थ होने पर कठोर निर्णय लेने से बचना चाहिए। आर. प्रेमा ने कहा कि महिलाओं को कभी भी अपनी मान्यताओं, मूल्यों और हितों को नहीं छोड़ना चाहिए। मुबीन राधिका ने लैंगिक समानता पर आधारित अपनी कुछ कविताएँ सुनाईं। सुपाला पांडियाराजन ने कहा कि महिलाओं को चुनौतियों को स्वीकारना चाहिए तथा अपने दैनिक प्रयासों में सफल होना चाहिए। कार्यक्रम के अंत में तमिळ विभाग के सहायक प्रोफ़ेसर एस.एम. संगवाई ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

साहित्य अकादेमी का 64वाँ स्थापना दिवस साहित्य मंच

12 मार्च 2018, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु ने साहित्य अकादेमी के स्थापना दिवस के अवसर पर 12 मार्च 2018 को सायं 6.00 बजे साहित्य अकादेमी, बेंगळूरु के सभागार में 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन किया।

इस कार्यक्रम में प्रख्यात कन्नड कवि, लेखक एवं साहित्य अकादेमी द्वारा बाल साहित्य पुरस्कार विजेता एच.एस. वेंकटेशमूर्ति को आमंत्रित किया गया था। उन्होंने प्रख्यात कन्नड कवि एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य यू.टी. नरसिम्हाचार द्वारा लिखित क्लासिक कृति *माले देगुला* पर अपना वक्तव्य दिया। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव एस.पी. महालिंगेश्वर ने अतिथियों का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी की 12 मार्च 1954 की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बारे में बताया। उन्होंने साहित्य अकादेमी के भूतपूर्व अध्यक्ष वी.के. गोकाक द्वारा 1987 में प्रारंभ संवत्सर व्याख्यान शृंखला तथा 2012 में प्रारंभ स्थापना दिवस व्याख्यान शृंखला के बारे में बताया।

एच.एस. वेंकटेशमूर्ति ने अपने स्थापना दिवस व्याख्यान में साहित्य अकादेमी और यू.टी. नरसिम्हाचार से अपने संबंध के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि यू.टी. नरसिम्हाचार के क्लासिक *माले देगुला* में 51 कविताएँ संकलित हैं और कवि की भाषा संस्कृतनिष्ठ है। उन्होंने जहाँ-तहाँ थोड़ा पौराणिक कन्नड शब्दों का भी प्रयोग किया है। कुवेम्पु ने अपने लेखन में आधुनिक संस्कृत शब्दों का प्रयोग किया है वहीं यू.टी. नरसिम्हाचार ने संस्कृत के दुर्लभ और पौराणिक शब्दों का प्रयोग अपनी कविता में

एस. पी. महालिंगेश्वर के साथ एच. एस. वेंकटेशमूर्ति

किया है। यू.टी. नरसिम्हाचार कन्नड साहित्य के नवोदय आंदोलन के महत्त्वपूर्ण कवि थे। *माले देगुला* एक ऐसी पुस्तक है जिसमें दार्शनिक धारा प्रवाहित होती है। यू.टी. नरसिम्हाचार ने मैसूर के छोटे से उपग्राम मेलूकोटे के मंदिर का श्रद्धापूर्ण उल्लेख अपनी कविता में किया है। वे एक स्वप्नदर्शी लेखक थे और उन्होंने कभी भी जाति और लिंग के आधार पर पक्षपात नहीं किया। वे रामानुजाचार्य के अद्वैत दर्शन के पक्के अनुयायी थे। उनके विचार हमेशा चैतन्य और आध्यात्मिक संकल्पनाओं से परिपूर्ण थे।

कार्यक्रम में यू.टी. नरसिम्हाचार पर वृत्तचित्र भी प्रदर्शित किया गया। इस वृत्तचित्र के निर्देशक चंद्रशेखर कंबार हैं। कार्यक्रम का समापन साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव एस. पी. महालिंगेश्वर के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ। कार्यक्रम में सुधी साहित्यप्रेमी उपस्थित थे।

साहित्य अकादेमी का 64वाँ स्थापना दिवस साहित्य मंच

12 मार्च 2018, मुंबई

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने अपना 64वाँ स्थापना दिवस मनाने हेतु 12 मार्च 2018 को अपने सभागार में 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर प्रख्यात मराठी लेखक, विचारक

और प्रकाशक रामदास भटकल को 'वर्तमान पाठन संस्कृति' विषय पर अपने विचार प्रकट करने हेतु आमंत्रित किया गया था। प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किम्बाहुने ने अतिथियों का स्वागत किया तथा साहित्य अकादेमी की विभिन्न गतिविधियों का संक्षिप्त ब्योरा प्रस्तुत किया।

श्री भटकल ने अपने भाषण में कहा कि राष्ट्र के विकास में पढ़ाई के महत्त्व को अनदेखा नहीं किया जा सकता। राष्ट्र के विकास के लिए किसी भी व्यक्ति में पढ़ने की संस्कृति पैदा करना महत्त्वपूर्ण है। पठन-पाठन संस्कृति को बनाए रखना ज़रूरी है अन्यथा साक्षरता निरक्षरता में बदल सकती है। कोई भी देश सार्थक विकास का सपना नहीं देख सकता यदि उसके नागरिक निरक्षर हों। शिक्षा-संस्कृति में गिरावट समाज की सामाजिक-आर्थिक संस्कृति पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। प्रकाशित पुस्तक की प्रामाणिक रूप से तथा सही तरीक़े से समीक्षा की जानी चाहिए जिससे पाठक की रुचि बढ़े। कार्यक्रम में कई साहित्यप्रेमी तथा मीडियाकर्मी उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में कृष्णा किम्बाहुने ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में साहित्यप्रेमियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

रामदास भटकल वक्तव्य देते हुए

साहित्य अकादेमी का 64वाँ स्थापना दिवस साहित्य मंच

12 मार्च 2018, चेन्नै

साहित्य अकादेमी के स्थापना दिवस के अवसर पर 12 मार्च 2018 को भारतीय विद्या भवन, माइलापुर, चेन्नै में 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। ए.एस. इलांगोवन ने स्वागत भाषण दिया। स्थापना दिवस व्याख्यान 'भारतीय साहित्य का विकास' विषय पर आधारित था। इरोड तमिऴनबन जिन्हें उनके कविता-संग्रह *वणक्कम वऴुवा* के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था, भी इस अवसर पर उपस्थित थे। साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार विजेता गौरी किरूबानंदन ने विगत 60 वर्षों से लेखकों को निरंतर प्रोत्साहित करने हेतु साहित्य अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि अनुवाद का उद्देश्य सदैव आपसी समझ तथा विभिन्न भाषायी एवं देश की साहित्यिक परंपराओं की मौलिकता को क़ायम रखना होना चाहिए। बाल साहित्य पुरस्कार विजेता खुशा खातिरसन ने युवा पाठकों को आकर्षित करने के लिए बच्चों की कहानियों के लेखन में शिल्प, तकनीक और बारीकियों की चर्चा की।

गौरी किरूबानंदन वक्तव्य देते हुए

पुस्तक-चर्चा

15 मार्च 2018, चेन्नै

साहित्य अकादेमी ने चेन्नै कार्यालय परिसर में 15 मार्च 2018 को एक 'पुस्तक-चर्चा' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। चर्चा के लिए चयनित पुस्तक थी—*पनमुगा नोक्किल अयोतिदासा पंडितर,* यह पुस्तक आर. संबथ द्वारा संपादित परिसंवाद के पठित आलेखों का संकलन है। इस पुस्तक पर चर्चा करने के लिए वी. प्रभाकरन को आमंत्रित किया गया था। उन्होंने कहा कि अयोतिदासा का जन्म कथावरायन में 20 मई 1845 को हुआ। वे सिद्ध दवाइयों के व्यवसायी थे, अपने शिक्षक वी. अयोतिदासा पंडितर के प्रति उनके मन में विशेष आदरभाव था जिसके कारण उन्होंने अपना नाम बदल कर 'अयोतिदासा पंडितर' रख लिया। उन्होंने *ओरु पैसा तामिझन* नामक एक साप्ताहिक पत्रिका प्रकाशित की जिसमें उनके तर्कसंगत, शैक्षिक परिप्रेक्ष्य तथा क्रांतिकारी विचार प्रकाशित हुए। श्री प्रभाकरन ने ज़ोर दिया कि अयोतिदासा के दर्शन और कार्यों का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक था क्योंकि वह हमें सार्वभौमिक तथा तकनीकी प्रगति से उत्पन्न होने वाली कई नई प्रकार की असमानताओं को दूर करने में हमारी मदद करेगा। उन्होंने अयोतिदासा पंडितर के प्रेरणादायक जीवन का विस्तृत परिचय तथा उनकी अंतर्दृष्टि का विश्लेषण उपलब्ध कराने की सराहना की।

पूर्वोत्तरी एवं दक्षिणी लेखिका सम्मिलन

16-17 मार्च 2018, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु ने सेंट्रल कॉलेज के सीनेट हॉल में पूर्वोत्तरी एवं दक्षिणी लेखिका सम्मिलन का आयोजन 16-17 मार्च 2018 को किया। इस सम्मिलन में एक ओर असमिया, बोडो, मणिपुरी तथा नेपाली भाषाओं पर वक्तव्य

कार्यक्रम में उपस्थित पूर्वोत्तर एवं दक्षिण भारत की लेखिकाएँ

देने के लिए लेखिकाएँ थीं तो दूसरी ओर कन्नड, तमिळ, मलयाळम् तथा तेलुगु जैसी दक्षिण भारतीय भाषाओं की लेखिकाएँ भी थीं। विदुषी लेखिकाओं ने लगभग 10 विभिन्न भाषाओं साहित्यिक, सांस्कृतिक बारीकियों तथा क्षेत्रीय विशेषताओं को अपने लेखन द्वारा परिचित कराया।

कार्यक्रम का प्रारंभ साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव के स्वागत भाषण से हुआ। उन्होंने चंद्रशेखर कंबार को साहित्य अकादेमी का अध्यक्ष निर्वाचित होने तथा सिद्धलिंगय्या को कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक चुने जाने पर मुबारकबाद दी, और आशा व्यक्त की कि वे अकादेमी के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे। उन्होंने कहा कि अकादेमी आदिवासी एवं लोक साहित्य के साथ-साथ सभी भारतीय साहित्य को बढ़ावा देती है और यह एक अद्वितीय सम्मिलन है क्योंकि इसमें दो क्षेत्रों की लेखिकाएँ अपनी साहित्यिक रचनाओं के पारस्परिक आदान-प्रदान के लिए एकत्रित हुई हैं। उन्होंने यह भी कहा कि साहित्य अकादेमी हमेशा महिला लेखन को प्रोत्साहित करती रही है। साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक सिद्धलिंगय्या ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि भारतीय भाषाओं में एक-दूसरे से बहुत कुछ सीखने को मिलेगा। उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुए यह भी टिप्पणी की कि स्कूल के विद्यार्थी भी शेक्सपीयर और वर्ड्सवर्थ के नाम से तो अवगत हैं, लेकिन तेलुगु, तमिळ या अन्य भारतीय भाषाओं के महत्त्वपूर्ण लेखकों के बारे में नहीं सुना है। इस समस्या का निदान इस तरह के कार्यक्रमों द्वारा किया जा सकता है।

प्रख्यात कन्नड लेखक एवं शोधकर्ता कमला हंपाना ने इस सम्मिलन का उद्घाटन करते हुए कहा कि भारत भौगोलिक और भाषिक दृष्टि से एक विशाल देश है और कोई भी देश इतना बहुभाषी नहीं हो सकता है। भारतीय साहित्य अलग-अलग भाषाओं में लिखा गया है। उन्होंने माना कि कन्नड साहित्य में हमेशा महिलाओं ने उच्च अनुपात में योगदान दिया है। उन्होंने महान कवि कुवेम्पु का उल्लेख किया जो महिला हित के समर्थक थे। उन्होंने एतिमाब्बे की ओर भी इंगित किया, जिन्होंने 1008 मंदिरों का निर्माण तथा कन्नड कवि रान्ना के प्रसिद्ध महाकाव्य को अनेक ताड़ पत्रों पर प्रतियाँ तैयार कर वितरित कीं। उन्होंने कहा कि कर्नाटक सरकार ने एतिमाब्बे के नाम पर पुरस्कार की शुरुआत की, जो महिला लेखकों को उनके महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए दिया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि पुरुष और महिला के साहित्य के बीच कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। इसे उसी समय प्रोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए और न ही नज़र अंदाज किया जाना चाहिए। उसे एक उपयुक्त स्थान दी जानी चाहिए और उचित तरीक़े से चर्चा भी की जानी चाहिए। कुछ चीज़ें जो सिर्फ़ महिलाओं द्वारा लिखी जा सकती हैं, इस पर चर्चा करने के लिए इस तरह का सम्मिलन बहुत अनुकूल है।

प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखिका अनिता नायर ने बीज वक्तव्य देते हुए कहा कि स्त्री, गाय, नदी, मन संदर्भ साहित्य में बार-बार आता है। मनुष्य और धर्म भी विशेष रूप से दर्शाए जाते हैं। अनिता नायर ने कुछ कवयित्रियों की ऐसी कविताओं का उल्लेख किया जो आज भी लेखकों के प्रेरणा के स्रोत हैं। उन्होंने कन्नड भक्ति आंदोलन की प्रसिद्ध लेखिका अक्क महादेवी का ज़िक्र किया, जिन्होंने कहा, 'मुझे मत पकड़ो, मुझे आगे जाने की इजाज़त दो' यह कथन आज भी प्रेरणादायक होना चाहिए। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि नारीवाद सिर्फ़ महिलाओं तक ही सीमित नहीं है, पुरुष भी नारीवादी हो सकता है। इसके बाद उन्होंने कहा कि नारी उनके साहित्य के केंद्र में है। आम तौर पर उनके उपन्यास की मुख्य पात्र माँ है। अकेले ही वह पूरे समुदाय को साथ ले जाने की ताक़त रखती है। उद्घाटन सत्र बहुभाषी कविता-पाठ का था। नौ कवयित्रियों ने अपनी कविताओं का पाठ अपनी मूल भाषा में अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ सुनाया। नीलिमा ठाकुरिया हक (असमिया), अंजलि बसुमतारी (बोडो), एच.एल. पुष्पा (कन्नड), विजयलक्ष्मी (मलयाळम्), कोङ्जाम सरिता सिन्हा (मणिपुरी), ऋजु देवी (नेपाली), मंजुला देवी (तमिळ), सुजाता पटवारी (तेलुगु) तथा रेवती पूवैथाह (कोडावा) कविता-पाठ में शामिल थीं।

प्रथम सत्र आलेख-पाठ का था जिसका विषय था—'नारी काव्य : वर्तमान भारतीय संदर्भ'। इस सत्र की अध्यक्षता कन्नड की प्रख्यात लेखिका प्रमिला माधव ने की। मैनी महंता (कन्नड) ने कहा कि कविता स्वयं की अभिव्यक्ति है। प्रमिला माधव (कन्नड) ने अक्क महादेवी की परंपरा पर बात की

तथा अन्य वाचनाकार्तिस जो कि कन्नड कवयित्री की प्रेरणा के स्रोत हैं, उन्होंने कहा कि वर्तमान संदर्भ के तीन स्तर थे– प्राचीन कथा, आंतरिक स्वर तथा हमारे आस-पास का समाज। वाहेङ्बम कुमारी चानू (मणिपुरी) ने कहा कि कवयित्रियों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए दृढ़संकल्प होना चाहिए। तेलुगु की लेखिका के. सुनीता रानी ने कहा कि हमारी चिंता समाज के लिए होनी चाहिए।

द्वितीय सत्र बहुभाषी कविता-पाठ का था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात कन्नड लेखिका वसुंधरा भूपति ने की। इस सत्र में सात कवयित्रियों तूलिका चेतिया येन (असमिया), रश्मि चौधुरी (बोडो), सरिता मोहन वर्मा (मलयाळम्), निङ्थोजम सोमोला देवी (मणिपुरी), बीनाश्री खारेल (नेपाली), कनिमोझि जी. (तमिळ) तथा हिमाजा (तेलुगु) ने अपनी कविताओं का पाठ किया। वसुंधरा भूपति ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि इन सभी कविताओं में एक चीज़ मिलती जुलती है, वह है मानवता और भावात्मक संवेदनशीलता। उन्होंने कन्नड भाषा में बुद्ध पर कविता का पाठ किया।

17 मार्च 2018 को तृतीय सत्र कहानी-पाठ का था जिसकी अध्यक्षता मणिकुंतला भट्टाचार्य ने की। लेखिका ज्वीशिरी बर' (बोडो), नेमिचंद्रा (कन्नड), एस. सितारा (मलयाळम्), नीरू शर्मा पराजुली (नेपाली), कलई सेल्वी (तमिळ) तथा पी. सत्यवती (तेलुगु) ने अपनी कहानियों का पाठ किया।

चतुर्थ सत्र बहुभाषी कविता पाठ का था जिसकी अध्यक्षता मलयाळम् की प्रख्यात लेखिका सावित्री राजीवन ने की। इस सत्र में अनुपमा बसुमतारी (असमिया), धनश्री स्वर्गीयरी (बोडो), अनसूया कांबले (कन्नड), बिरला सिंह (मणिपुरी), कुट्टी रेवती (तमिळ), रेणुका अयोला (तेलुगु) तथा मल्लिका शेट्टी (तुलु) ने अपनी कविताओं का पाठ किया, साथ ही मल्लिका शेट्टी ने अपनी गीतात्मक रचना के द्वारा श्रोताओं से सराहना प्राप्त की। कन्नड कवि तथा साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक सिद्धलिंगय्या ने कहा कि यह कवयित्रियों का अद्भुत सम्मिलन है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक कविता एक देववाणी तथा भारतीय संस्कृति को बहुमत से प्रतिबिंबित करने की तरह है।

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव एस. पी. महालिंगेश्वर ने इस लेखिका सम्मिलन को सफल बनाने के लिए रचनाकारों तथा श्रोताओं के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। इस समारोह में बड़ी संख्या में स्थानीय रचनाकार एवं साहित्यप्रेमी उपस्थित थे। सभी ने साहित्य अकादेमी के ऐसे विशिष्ट कार्यक्रमों की प्रशंसा की।

लोक : विविध स्वर

16 मार्च 2018, बेंगळूरु

अप्पागेरे थिम्माराजू एवं मंडली लोकगीत प्रस्तुत करते हुए

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु में 16 मार्च 2018 को सायं 5.30 बजे अप्पागेरे थिम्माराजू एवं उनकी मंडली द्वारा 'लोक : विविध स्वर' कार्यक्रम शृंखला के अंतर्गत कन्नड में महिलाओं एवं उनके ग्रामीण जीवन पर आधारित कन्नड लोकगीत प्रस्तुत किए गए। थिम्माराजू एवं उनकी सह-गायिकाओं की जादुई आवाज़ से श्रोता मंत्रमुग्ध हो गए। उनकी प्रस्तुति से प्रेरित होकर पूर्वोत्तर से आई लेखिकाओं ने भी नृत्य के साथ लोकगीत प्रस्तुत किए।

अखिल भारतीय कविता उत्सव

21 मार्च 2018, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा 21 मार्च 2018 को नई दिल्ली में 'विश्व कविता दिवस' के अवसर पर अखिल भारतीय कविता उत्सव आयोजित किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में प्रख्यात हिंदी कवि एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य केदारनाथ सिंह को श्रद्धांजलि देने के लिए एक मिनट का मौन रखा गया। प्रख्यात ओड़िया कवि एवं विद्वान तथा साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य सीताकांत महापात्र ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि कविता हमें जीवन को बेहतर तरीक़े से समझने का अवसर देती है। यह हमें हमारी नियति को भी समझने में सहायता करती है। आज हम जिस कृत्रिम समाज में जी रहे हैं उसमें आशा की किरण हमें कविता ही प्रदान करती है। कविता हमारी सभ्यता और मनुष्य की लंबी जीवन-यात्रा के विभिन्न चरणों को भी प्रस्तुत करती है। बहुत सी भाषाओं के लुप्त होने का ख़तरा है। हम उन भाषाओं को, उनकी कविताओं को सम्मान देकर ही बचा सकते हैं। उन्होंने अपनी कुछ कविताएँ भी प्रस्तुत कीं।

विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रख्यात बाङ्ला लेखिका और विद्वान नबनीता देवसेन ने कहा कि मेरा व्यक्तित्व कविता का ही व्यक्तित्व है। मेरे लिए कविता ही जीवन है। उन्होंने अपने बचपन में हुई विभिन्न भारतीय भाषाओं के कवियों से अपनी मुलाक़ात का ज़िक्र करते हुए कहा कि उन सबके प्रभाव से ही उनकी दृष्टि केवल बाङ्ला तक ही सीमित न रहकर भारतीय कविता में व्यापक रूप से विकसित हुई। उन्होंने कहा कि आज भी जब मैं गद्य या पद्य में कुछ लिखना चाहती हूँ तो सबसे पहले कविता को ही चुनती हूँ। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि भारतीय कविता पारंपरिक होने के साथ-साथ वैश्विक चेतना से समृद्ध है। भारत में कविता का विकास सदा ही सक्रिय पाठकों के कारण हुआ है।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार (मध्य में) अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए साथ में सुदीप बनर्जी, नबनीता देवसेन, के. श्रीनिवासराव, सीताकांत महापात्र तथा माधव कौशिक (बाएँ से दाएँ)

पाठकों की इसी सक्रियता के कारण हमारी कविता हमेशा विशिष्ट और समाज की प्रमुख प्रवृत्तियों को प्रस्तुत करने में सफल रही है। कविता ही पूरे विश्व को एक परिवार के रूप में बाँधने में सफल रही है। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने अपने समाहार वक्तव्य में कहा कि कवि अपनी कविताओं के द्वारा एक समांतर दुनिया तैयार करता है, जिसमें दुनिया को बेहतर बनाने के लिए वांछित सारी चीज़ें उपस्थित होती हैं। संभवतः इसीलिए कवि को 'प्रजापति' कहा जाता है। उन्होंने अपनी कुछ ग़ज़लें भी श्रोताओं को सुनाईं। कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि यूनेस्को द्वारा 'विश्व कविता दिवस' का आरंभ दुनिया की भाषायी विविधता को सामने लाने के लिए किया गया था और साहित्य अकादेमी भी इसी के लिए प्रयासरत है।

अगले सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात कन्नड लेखक एस.जी. सिद्दारमैया ने की, जिसमें आर. राजा राव (अंग्रेज़ी), विष्णुचंद्र शर्मा (हिंदी), बाल कृष्ण संन्यासी (कश्मीरी), के. जयकुमार (मलयाळम्), मीठेश निर्मोही (राजस्थानी), निखिलेश्वर (तेलुगु) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। अन्य दो सत्रों में प्रबोध पारीख तथा प्रतिभा सतपथी की अध्यक्षता में यू.जी. ब्रह्म (बोडो), प्रकाश प्रेमी (डोगरी), गंगाप्रसाद विमल (हिंदी), मेल्विन रोड्रीग्स (कोंकणी), मनप्रसाद सुब्बा (नेपाली), उदयचंद्र झा 'विनोद' (मैथिली), राजकुमार भुवनस्ना (मणिपुरी), प्रभा गनोरकर (मराठी), राणि सदाशिवमूर्ति (संस्कृत), दमयंती बेसरा (संताली), विम्मी सदारंगाणी (सिंधी), अंडाल प्रियदर्शिनी (तमिळ) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

कवि सम्मिलन

21 मार्च 2018, चेन्नै

साहित्य अकादेमी द्वारा चेन्नै कार्यालय परिसर में 21 मार्च 2018 को 'विश्व कविता दिवस' के अवसर पर 'साहित्य मंच' कार्यक्रम आयोजित किया गया। ए.एस. इलांगोवन ने वक्ताओं तथा श्रोताओं का स्वागत किया। प्रख्यात तमिळ कवि मु. मेहता तथा साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता एम. भूपति ने संक्षेप में नसीम ऐज़ेकिल, डोम मोरेस तथा ए.के. रामानुजन के कार्यों पर अपने विचार व्यक्त किए। कविमुगिल ने कुछ कविताएँ प्रस्तुत कीं जो सामाजिक समस्याओं, पीड़ाओं तथा भावनात्मक विचारों से संबंधित थीं। साहित्य अकादेमी की पूर्व सामान्य परिषद् के सदस्य रामा गुरुनाथन, पुस्तकालयों के पूर्व निदेशक एन. अवादस्यप्पन, आकाशवाणी के पूर्व निदेशक स्टालिन, बी. वीरमणि तथा अन्य स्थानीय विद्वान इस कार्यक्रम में उपस्थित हुए।

लोक : विविध स्वर

22 मार्च 2018, नई दिल्ली

'लोक : विविध स्वर' कार्यक्रम के अंतर्गत ब्रज के लोकगीत एवं लोकनृत्य प्रस्तुत किए गए। इस कार्यक्रम में ब्रज में प्रचलित कई पारंपरिक लोकगीतों और लोकनृत्यों की झलकियाँ प्रस्तुत की गईं। विभिन्न मौसमों में गाए जाने वाले चौमासा, बारामासा और होली के दौरान गाए जाने वाले गीतों और नृत्यों की मनमोहक प्रस्तुति हुई। हरिसिंह पाल ने इन विभिन्न लोकगीतों और लोकनृत्यों की परंपरा पर सुचिंतित शोध आलेख प्रस्तुत किया। मथुरा के दिनेश शर्मा और उनके दल द्वारा नृत्य प्रस्तुति की गई। गायन नत्थु सिंह बघेल और रामगोपाल सत्यार्थी का था। यह कार्यक्रम साहित्य अकादेमी के प्रथम तल स्थित सभागार में आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रोता और दर्शक मौजूद थे।

फूलों से खेली गई बरसाने की होली में सहृदय लोगों ने भी हिस्सा लिया और कार्यक्रम को सफल बनाया। सभी ने साहित्य अकादेमी से इस तरह की और भी प्रस्तुतियाँ आयोजित कराने की अपेक्षा व्यक्त की। सभी ने कहा कि ऐसे आयोजनों से हमारी भारतीय संस्कृति की झलक मिलती है।

सांस्कृतिक प्रस्तुति की एक झलक

परिसंवाद
मैथिली एवं बाङ्ला: परस्पर संबंध

23 मार्च 2018, कोलकाता

साहित्य अकादेमी द्वारा 23 मार्च 2018 को कोलकाता स्थित क्षेत्रीय कार्यालय सभागार में 'मैथिली एवं बाङ्ला : परस्पर संबंध' विषयक परिसंवाद का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय प्रभारी मिहिर कुमार साहु ने अतिथियों एवं उपस्थित मैथिली तथा बाङ्ला के साहित्यप्रेमियों का स्वागत किया। उन्होंने अपने स्वागत भाषण में मिथिला तथा बंगाल एवं मैथिली और बाङ्ला भाषा-साहित्य के पारस्परिक संबंध और सौहार्द की चर्चा करते हुए इस परिसंवाद के आयोजन की महत्ता और प्रासंगिकता को भी उजागर किया।

साहित्य अकादेमी के मैथिली भाषा परामर्श मंडल के संयोजक प्रेम मोहन मिश्र ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि बंगाल और मिथिला के अंतर्संबंध प्राचीन काल से ही अत्यंत आत्मीय रहे हैं। दोनों भाषा-भाषियों में सांस्कृतिक और साहित्यिक आदान-प्रदान का गौरवशाली इतिहास रहा है।

बीज भाषण देते हुए वरिष्ठ साहित्यकार और मैथिली दैनिक *मिथिला समाद* के पूर्व संपादक ताराकांत झा ने मैथिली एवं बाङ्ला के परस्पर संबंध पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने ऋग्वैदिक काल से लेकर वर्तमान काल तक के बाङ्ला एवं मैथिली, बंगाल एवं मिथिला संबंध सरोकार को जोड़ने वाली महत्त्वपूर्ण घटनाओं एवं तथ्यों को प्रस्तुत किया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार एवं *कर्णामृत* पत्रिका के संपादक राजनंदन लाल दास ने की। उन्होंने अपने वक्तव्य में मध्ययुग एवं आधुनिक काल के बंगाल-मिथिला मैत्री के उदाहरण प्रस्तुत किए। श्री दास ने मैथिली भाषा, लिपि और प्राचीन साहित्य के संरक्षण तथा पुनरुद्धार हेतु बाङ्ला विद्वानों, इतिहासकारों तथा साहित्यकारों के अवदान की विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि मैथिली और बाङ्ला का संबंध न सिर्फ़ भाषा बल्कि जीवन से जुड़ा हुआ रिश्ता है। उन्होंने दोनों भाषा-भाषी क्षेत्रों की समानताओं को भी रेखांकित किया।

परिसंवाद के विचार सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार महेंद्र हजारी ने की, जिसमें सर्वश्री रामलोचन ठाकुर, नवीन चौधरी एवं चंदन कुमार झा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। वरिष्ठ मैथिली साहित्यकार रामलोचन ठाकुर ने 'मैथिली एवं बाङ्ला लिपि : परस्पर संबंध' विषयक अपने आलेख में दोनों लिपियों की समानता और विशिष्टता को ख़ास तौर पर रेखांकित किया। साथ ही उन्होंने कहा कि दोनों लिपियों की अत्यधिक समानता के कारण ही छठी शताब्दी से उन्नीसवीं शताब्दी तक दोनों भाषा के साहित्यकार एक-दूसरे की भाषा एवं साहित्य से प्रभावित हुए और इनके बीच साहित्यिक अंतर्संबंध प्रगाढ़ रहा। उन्होंने मैथिली भाषा, साहित्य और लिपि के संरक्षण हेतु बाङ्ला के विद्वानों के अवदान की भी चर्चा की। नवीन चौधरी ने 'मैथिली एवं बाङ्ला : भाषिक अंतर्संबंध' विषयक अपने आलेख में दोनों भाषाओं के उद्गम और विकास-यात्रा की चर्चा की। उन्होंने दोनों भाषाओं को सगी बहन बताया, जो कि एक ही स्रोत से उत्पन्न हुई हैं। साथ ही उन्होंने मिथिला एवं बंगाल की सांस्कृतिक अंतर्संबंध में जयदेव, विद्यापति, रवींद्रनाथ ठाकुर, माइकेल मधुसूदन दत्त की रचनाओं के योगदान की भी चर्चा की।

युवा साहित्यकार चंदन कुमार झा ने 'बंगालक ब्रजबुलि साहित्य एवं मैथिली' विषयक अपने आलेख का पाठ किया। उन्होंने कहा कि मध्ययुग मिथिला और बंगाल के सामाजिक-साहित्यिक अंतर्संबंधों का स्वर्णकाल रहा। राधा, विद्यापति और तिरहुत वे तीन प्रमुख स्तंभ हैं, जिनके बग़ैर दोनों भाषाओं का साहित्यिक इतिहास अधूरा है। उन्होंने कहा कि विद्यापति के प्रभाव से ही 'ब्रजबुलि' नामक एक कृत्रिम भाषा का जन्म हुआ, जिसमें लगभग चार सौ वर्षों तक रचनाएँ होती रहीं। ब्रजबुलि की आत्मा मैथिली है। आगे उन्होंने ब्रजबुलि साहित्य की अनेक विशिष्टताओं और उसमें मैथिली भाषा के योगदान की चर्चा की।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में महेंद्र हजारी ने ब्रजबुलि साहित्य और इसके रचनाकारों से संबंधित अनेक पक्षों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अंत में साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक गौतम पॉल ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में मैथिल और बाङ्ला भाषी साहित्यप्रेमियों सहित स्थानीय बुद्धिजीवी उपस्थित थे। सभी ने इस कार्यक्रम की सार्थकता की सराहना की।

परिसंवाद में उपस्थित प्रेम मोहन मिश्र और राजनंदन लाल दास

अखिल भारतीय लेखक सम्मिलन

24-25 मार्च 2018, कोहिमा, नागालैंड

साहित्य अकादेमी ने नागालैंड विश्वविद्यालय के सहयोग से 24-25 मार्च 2018 को कोहिमा, नागालैंड में द्वि-दिवसीय अखिल भारतीय लेखक सम्मिलन का आयोजन किया। यह पहली बार था जब साहित्य अकादेमी ने नागालैंड में राष्ट्रीय स्तर पर किसी कार्यक्रम का आयोजन किया। इस भव्य कार्यक्रम के आयोजन का उद्देश्य देश के विभिन्न प्रांतों से विभिन्न भाषाओं के प्रतिष्ठित लेखकों को एकत्रित कर नागालैंड में तथा नागा लेखकों को एक नए परिवेश में लाना था, जोकि एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। यह अवसर नागालैंड की भाषाओं को देश की विभिन्न भाषाओं के निकट लाने का भी था।

साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने प्रतिनिधियों का स्वागत किया तथा लेखकों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया कि वे नागा संस्कृति तथा साहित्यिक परंपराओं से औरों को भी परिचित कराएँ। उन्होंने यह भी कहा कि साहित्य अकादेमी नागा भाषायी समुदायों के साथ साहित्यिक सभाओं का आयोजन करने में पूर्ण सहयोग करेगी। उन्होंने अकादेमी की सामान्य परिषद् के स्थानीय सदस्यों तेमसुला आओ एवं डी. कुओली से कार्यक्रमों के आयोजन हेतु लेखकों की एक व्यापक सूची भेजने का भी अनुरोध किया। डी. कुओली ने ज़ोर देकर कहा कि इस कार्यक्रम को आयोजित करने का विचार एक रचनात्मक प्रयास है, जो कि देश के लेखकों को एक साथ लाने का एक सोपान है।

प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखिका तेमसुला आओ ने बीज-भाषण देते हुए कहा कि नागाओं की समृद्ध मौखिक परंपरा है किंतु आधुनिक पीढ़ी ने कई जानकार कहानी-वाचकों और लोक गायकों को खो दिया है, जिसे वह समाज की प्रगति और विकास की राह में महान क्षति मानती हैं। उन्होंने युवा पीढ़ी को नई परंपरा बनाने हेतु प्रोत्साहित किया तथा उनकी सराहना भी की जहाँ मौखिक परंपरा की आत्मा नई शक्ति के साथ गूँज रही है।

तेमसुला आओ, के. श्रीनिवासराव, डी. कुओली एवं माधव कौशिक (बाएँ से दाएँ)

नागालैंड विश्वविद्यालय के कुलाधिपति रमेश सी. गुप्ता ने साहित्य अकादेमी की एक संस्था के रूप में स्थापना एवं उसके कार्यों पर एक संक्षिप्त ऐतिहासिक ब्योरा प्रस्तुत किया तथा इसके संस्थापकों की आकांक्षाओं पर प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने साहित्य अकादेमी की भूमिका तथा सभी साहित्यिक गतिविधियों के संचालन एवं आयोजन, पुस्तकों के प्रकाशन आदि गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

उद्घाटन सत्र के पश्चात् दिगंत सइकिया (असमिया), टी. सेनका आओ (आओ), बरनाली बग्लरी (बोडो), ज्ञानेश्वर (डोगरी), निनि लुङ्गालंग (अंग्रेज़ी-पूर्वोतर), जी. वसंतकुमारन (तमिळ), जयंत परमार (उर्दू) ने कविता-पाठ किया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता पॉल ज़कारिया ने की। इस सत्र का विषय था—'लेखन : जुनून या व्यवसाय'। विजय शंकर बर्मन (असमिया), बिंदु भट्ट (गुजराती), गीतांजलिश्री (हिंदी) तथा जेठो लालवानी (सिंधी) ने इस सत्र में अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे दिन आयोजित द्वितीय सत्र का विषय था–'कविता एवं कथासाहित्य : एक तुलना'। इस सत्र की अध्यक्षता गीतांजलिश्री ने की। इस सत्र के वक्ता थे प्रबल कुमार बसु (बाङ्ला), नरहल्ली बालसुब्रह्मण्य (कन्नड) तथा एम. प्रियब्रत सिंह (मणिपुरी)। अंतिम सत्र कविता-पाठ का था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात हिंदी कवि माधव कौशिक ने की तथा परेश कामत (कोंकणी), आई. रोबिंद्रो सिंह (मणिपुरी), माधव भट्टराई (नेपाली), एविनूओ किरे (अंगामी नागा), आदित्य कुमार मांडी (संताली), चैतन्य पिंगाली (तेलुगु) तथा मोनालिसा चंकीजा (अंग्रेज़ी) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कार्यक्रम के अंत में समस्त प्रतिभागियों, नागालैंड विश्वविद्यालय तथा साहित्यिक समुदाय को कोहिमा में आयोजित अखिल भारतीय लेखक सम्मिलन को सफल बनाने हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया।

पूर्वोत्तरी और पश्चिमी लेखक सम्मिलन

29-30 मार्च 2018, मुंबई

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने अपने सभागार में 29-30 मार्च 2018 को द्वि-दिवसीय पूर्वोत्तरी और पश्चिमी लेखक सम्मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने प्रख्यात सिंधी लेखक बंसी खूबचंदाणी (दुर्भाग्य से जिनकी उसी दिन प्रातः मृत्यु हो गई थी) को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने इस सम्मिलन के प्रतिभागी लेखकों का परिचय

ध्रुव ज्योति बोरा, कृष्णा किम्बाहुने, रंगनाथ पठारे एवं साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव (बाएँ से दाएँ)

दिया। आरंभिक वक्तव्य प्रख्यात मराठी लेखक तथा साहित्य अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल के संयोजक रंगनाथ पठारे ने दिया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के सम्मिलन विचारों के आपसी आदान-प्रदान का माध्यम हैं। उन्होंने प्रबुद्ध श्रोताओं से क्षेत्रीय भाषाओं की प्रतिष्ठा क़ायम रखने के लिए प्रभावी क़दम उठाने की अपील की। उद्घाटन सत्र में अध्यक्षीय वक्तव्य प्रख्यात असमिया लेखक एवं उपन्यासकार ध्रुव ज्योति बोरा ने दिया। साहित्य अकादेमी मुंबई कार्यालय के क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किम्बाहुने ने सत्रांत में धन्यवाद ज्ञापित किया।

उद्घाटन सत्र के पश्चात् कविता-पाठ का आयोजन किया गया, जिसमें आठ भाषाओं के कवियों ने सहभागिता की। सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मराठी समालोचक सतीश बादवे ने की। ज्ञान पुजारी ने असमिया में एक लंबी कविता प्रस्तुत की तथा उसका अंग्रेज़ी अनुवाद भी प्रस्तुत किया। धीरज बसुमतारी ने अपनी बोडो कविताएँ प्रस्तुत कीं। गुजराती कवि सुरेंद्र कादिया ने अपनी गुजराती ग़ज़ल 'बूँद' पढ़ी तथा उसका अंग्रेज़ी अनुवाद भी प्रस्तुत किया। बालकृष्ण माल्या ने अपनी कोंकणी कविताएँ प्रस्तुत कीं। मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक एन. किरणकुमार सिंह ने 'सर्वश्रेष्ठ पसंद हो मेरी', 'घर की तलाश', 'आँसू', 'साँस के साथ जीवन' कविताओं का पाठ किया। वीरधवल परब ने अपनी मराठी कविताएँ प्रस्तुत कीं। नेपाली कवि एम. पाठक ने अपनी नेपाली कविताएँ अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ प्रस्तुत कीं। सत्र के अंत में एन. लछवाणी ने सिंधी ग़ज़लें प्रस्तुत कीं।

द्वितीय सत्र का विषय था—'काव्य की परंपरा'। सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक भूषण भावे ने की और पिकुमणि दत्त, अदराम बसुमतारी, अजय सिंह चौहान तथा राजे पवार ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तृतीय सत्र कविता-पाठ का था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात सिंधी साहित्यकार विम्मी सदारंगाणी ने की। सिद्धार्थ शंकर कलिता, गोपीनाथ ब्रह्म, भावेश भट्ट तथा संजीव वेरेनकर ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। विम्मी सदारंगाणी ने भी अपनी कविताएँ सुनाईं।

चतुर्थ सत्र कहानी-पाठ का था तथा इस सत्र की अध्यक्षता ध्रुव ज्योति बोरा ने की। इस सत्र में मनोज कुमार गोस्वामी (असमिया), गोबिंद बसुमतारी (बोडो), मोहन परमार (हिंदी) तथा प्रकाश पर्येकार ने अपनी कहानियों का पाठ किया।

पंचम सत्र का विषय था—'काव्य की परंपरा', इस सत्र की अध्यक्षता रंगनाथ पठारे ने की तथा सलाम तोम्बा सिंह (मणिपुरी), सतीश बादवे (मराठी), पेम्पा तमांग (नेपाली) तथा विम्मी सदारंगाणी (सिंधी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

षष्ठ सत्र कहानी-पाठ का था। इस सत्र की अध्यक्षता एन. किरणकुमार सिंह ने की तथा बीमावती थियाम ओंगबी (मणिपुरी), शमशेर अली (नेपाली) तथा बालाजी सुतार (मराठी) ने अपनी कहानियों का पाठ किया साथ ही उसका अंग्रेज़ी/हिंदी अनुवाद भी प्रस्तुत किया।

सप्तम एवं अंतिम सत्र कविता-पाठ का था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मराठी विदुषी नीरजा ने की। साल्लम चानू (मणिपुरी), विजय चोरमारे (मराठी), युवराज सुंदास (नेपाली) तथा गीता बिंदरानी (सिंधी) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

कार्यक्रम के अंत में कृष्णा किम्बाहुने ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

पूर्वोत्तर और दक्षिणी लेखक सम्मिलन

30-31 मार्च 2018, विशाखापट्टनम

साहित्य अकादेमी ने 30-31 मार्च 2018 को विशाखापट्टनम पब्लिक लाइब्रेरी, द्वारका नगर में पूर्वोत्तर और दक्षिणी लेखक सम्मिलन का आयोजन किया। प्रख्यात विद्वान एवं नंदी पुरस्कार आदि कई प्रतिष्ठित सम्मानों से सम्मानित मिगादा रामलिंगा ने कार्यक्रम की शुरुआत भारत की प्रशंसा तथा एकता में अनेकता पर आधारित दो पद्य सुनाकर की। साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक के. शिवारेड्डी ने कार्यक्रम का आरंभ एक कलाकार को साहित्य अकादेमी से प्रकाशित पुस्तकें भेंट करके की।

साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में सांस्कृतिक मुख्यधारा में पूर्वोत्तर के लेखकों और कवियों को आत्मसात करने के महत्त्व को रेखांकित किया तथा ज़ोर दिया कि विनिमय की यह प्रक्रिया, जो साहित्य अकादेमी तथा भारतीय साहित्य का मुख्य उद्देश्य है, अच्छी तरह जारी है और देश के क्षेत्रों के अनुसार लेखकों का यह संगम निरंतर आगे बढ़ता जाएगा। उन्होंने तेलुगु और कन्नड भाषा परामर्श मंडल के नव निर्वाचित संयोजकों के. शिवा रेड्डी और एस. सिद्धलिंगय्या को

पूर्वोत्तर एवं दक्षिणी लेखक सम्मिलन के उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव एवं अतिथि

बधाई दी तथा प्रख्यात लेखक कालीपट्टनम रामाराव का परिचय देते हुए कहा कि उनकी प्रेरणादायक उपस्थिति ने तेलुगु कहानी को समृद्ध किया है तथा इसे ऐतिहासिक अर्थ दिया है। असम से पधारे वरिष्ठ लेखक लक्ष्मीनंदन बोरा ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। पी. आदेश्वर राव कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। के. शिवारेड्डी ने आरंभिक वक्तव्य देते हुए भारत की बहुलतावादी संस्कृति के महत्त्व पर बल दिया और आशा व्यक्त की कि इस सम्मिलन में कवियों, कहानी लेखकों की रचनाओं में यह देखी जा सकेगी। उन्होंने आश्वासन दिया कि नई सामान्य परिषद् और अधिक अच्छा कार्य करने का प्रयास करेगी।

अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने उपस्थित लोगों को बताया कि साहित्य अकादेमी की कार्य-सूची में यात्रा अनुदान तथा अन्य युवा उन्मुख प्रचार कार्यक्रम शामिल हैं तथा उन्होंने युवा साहित्यिक प्रतिभाओं को इन संसाधनों और योजनाओं का उपयोग करने की सलाह दी। उन्होंने सूचित किया कि अकादेमी ने विभिन्न भारतीय भाषाओं में वर्ष भर में लगभग 575 पुस्तकें प्रकाशित की हैं। प्रत्येक ग्रामीण क्षेत्र की प्रतिभाओं को बढ़ावा देने हेतु 'ग्रामालोक' कार्यक्रम शृंखला प्रारंभ की गई है जिससे ग्रामीण भारत से जुड़ाव में सुविधा होगी।

प्रख्यात तेलुगु लेखक कालीपट्टनम रामाराव ने अपने उद्घाटन व्याख्यान में कहा कि लेखन का उद्देश्य विचारों को साझा करना होता है। और आमतौर पर, जो लोग बोलने तथा व्याख्यानों में उत्कृष्ट नहीं हो सके उन्होंने लेखन को अपना मुख्य कार्य बना लिया। उन्होंने कहा कि समस्त जन्मों में मनुष्य जीवन सबसे उत्कृष्ट है। पोशाक, फर्नीचर और गैजेट जीवन नहीं बनाते हैं, यह मानव जाति का श्रम है जो उसे अत्यधिक मूल्यवान बनाता है।

प्रख्यात असमिया लेखक लक्ष्मीनंदन बोरा ने सत्र की अध्यक्षता की तथा उन्होंने भारतीय अंग्रेज़ी लेखन पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने भारतीय लेखकों को यह सुझाव दिया कि उनमें विभिन्न भाषाओं में लिखने की प्राकृतिक प्रतिभा है। दक्षिण भारत में लेखन का एक अलग पक्ष और माहौल है। उन्होंने मलयाळम् के लेखक तकषि शिवशंकर पिळ्ळै तथा तमिळ भाषा के लेखक अशोक मित्रन के कार्यों का भी उल्लेख किया। दक्षिण भारतीय या द्रविड़ भाषाओं की समृद्धि के बारे में बोलते हुए उन्होंने कहा कि महाकाव्यों का पहला अनुवाद इन भाषाओं में किया गया तथा बाद में पूर्वोत्तर भारत की भाषा यथा—असमिया में अनुवाद का प्रयास किया गया। आंध्र विश्वविद्यालय का पूर्व छात्र होने के नाते उन्होंने साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य को भी याद किया। विशिष्ट अतिथि पी. आदेश्वर राव ने अपनी अकादमिक तथा आलूरी बैरागी के कार्यों की अनुवाद गतिविधियों जैसे—'द ब्रोकन मिरर', 'वॉयस फ्रॉम द एम्पटी बेल' (अंग्रेज़ी में) तथा 'प्रेम कवितालु' (तेलुगु में) तथा 'कामायनी' के हिंदी से तेलुगु अनुवाद के बारे में विचार साझा किए।

उद्घाटन सत्र के पश्चात् बहुभाषी कविता-पाठ का सत्र आयोजित किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता के. शिवारेड्डी ने की। बिपुल सहमिया (असमिया) ऋतुराज बसुमतारी (बोडो), बी.आर. लक्ष्मण राव (कन्नड), वी. मधुसूदन नायर (मलयाळम्), टी. नेत्रजीत सिंह (मणिपुरी), अबीर खालिंग (नेपाली), अज़हागिरया पेरिवत (तमिळ), असलम हसन (उर्दू) तथा के. संजीव राव (तेलुगु) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

भोजनोपरांत, प्रथम सत्र का विषय था—'मेरा साहित्य, मेरा संसार'। एस.एम.

लेखक सम्मिलन के प्रतिभागी

इक़बाल ने इस सत्र की अध्यक्षता की तथा अरिंदम बरकटकी (असमिया), जी. विजय कुमार शर्मा (मणिपुरी), सु. वेणुगोपाल (तमिळ) तथा राम तीर्थ (तेलुगु) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र कविता-पाठ का था। इस सत्र की अध्यक्षता जानेमाने तेलुगु लेखक तथा अकादेमी अनुवाद पुरस्कार विजेता एल.आर. स्वामी ने की। जीबन नाराह (असमिया), यू. के. बसुमतारी (बोडो), सी. रावुन्नी (मलयाळम्), लेनिन खुमनचा (मणिपुरी), सुभाष सोतंग (नेपाली), बी. मीनाक्षी सुंदरम (तमिळ), पी. रामकृष्ण तथा एस. स्वामीनाइडु (तेलुगु) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

कार्यक्रम के दूसरे दिन वासिरेड्डी नवीन ने कहानी-पाठ केंद्रित तृतीय सत्र की अध्यक्षता की। साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य वासिरेड्डी नवीन ने अन्नाकारेनीना तथा कालीपट्टनम रामाराव के कार्यों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि वर्तमान जीवन अधिक जटिल हो गया है तथा लेखकों को समाज में होने वाले बदलावों के प्रति जागरूक होने की आवश्यकता है। बोंती सेनचोवा (असमिया), एस. दिवाकर, (कन्नड), पी. राधाकृष्णन (मलयाळम्), हेइसम बुदिचंद्र सिंह (मणिपुरी), हरीश मोक्तान (नेपाली), सुब्रभारती मणियन (तमिळ), चिंताकिंदी श्रीनिवास राव (तेलुगु) ने अपनी कहानियों के अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किए।

सत्र के अंत में वासिरेड्डी नवीन ने समापन वक्तव्य देते हुए कहा कि अंतर भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद बहुत आवश्यक है। इस संदर्भ में अनुवादक कल्लूरी श्यामला ने कहा कि अनुवादकों की सूची तैयार की जानी चाहिए तथा हमें भारतीय भाषाओं में अनुवाद पर ध्यान देना चाहिए।

चतुर्थ एवं अंतिम सत्र कविता-पाठ का था। इस सत्र की अध्यक्षता कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक एस. सिद्धलिंगय्या ने की। कुशल दत्त (असमिया), सोपना बगलारू (बोडो), एच.एन. आरती (कन्नड), एल.आर. स्वामी, आर. श्रीलता वर्मा (मलयाळम्), इमोजेत निंगोङ्बम (मणिपुरी), जोगेंद्र दरनाल (नेपाली), तेनमोझी दास (तमिळ) तथा बालासुधाकर मौली (तेलुगु) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

श्रद्धांजलि : केदारनाथ सिंह

3 अप्रैल 2018, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा 3 अप्रैल 2018 को वरिष्ठ कवि और साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य केदारनाथ सिंह की स्मृति में शोक सभा का आयोजन किया गया।

वरिष्ठ आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी ने केदार जी को ऐसे कवि के रूप में याद किया जो संसार से सब कुछ छूटते जाने पर चिंतित है और उसे अपनी कविता द्वारा पकड़ने की कोशिश कर रहा है। उन्होंने उनकी कविताओं में इतिहास के तात्कालिक एजेंडे से दूर आम आदमी की आवाजाही को बेहद महत्त्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि केदारनाथ सिंह की कविता लोक और आधुनिकता का अद्भुत सामंजस्य प्रस्तुत करती है। प्रख्यात आलोचक मैनेजर पांडेय ने कहा कि उनकी कविता में स्थानीयता की ऐसी ज़मीन है जिस पर भारतीयता की नींव खड़ी है।

प्रसिद्ध मलयाळम् कवि एवं अकादेमी के पूर्व सचिव के. सच्चिदानंदन ने उनकी कविताओं में गाँव की स्मृतियों की चर्चा करते हुए उनको ऐसे कवि के रूप में पाया जो अपनी कविताओं की तरह ही अनूठा था।

वरिष्ठ डोगरी कवयित्री पद्मा सचदेव ने उनके भोजपुरी भाषा प्रेम को याद करते हुए उनकी सहजता को याद किया।

प्रसिद्ध कवि एवं कथाकार गंगाप्रसाद विमल ने उनके सर्वजनप्रिय व्यक्तित्व को याद करते हुए उन्हें अपनी विनम्र श्रद्धांजलि दी।

प्रख्यात कथाकार अब्दुल बिस्मिल्लाह ने उन पर लिखी गई अपनी कहानी 'आधा शव आधा फूल' का ज़िक्र करते हुए उन्हें बेहद आत्मीय और विभिन्न भाषाओं के कवियों को पसंद करने वाला महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व बताया।

शोक सभा में निर्मला जैन, मुरली मनोहर प्रसाद सिंह, लीलाधर मंडलोई, मंगलेश डबराल, अनामिका, गोविंद प्रसाद, देवेंद्र राज अंकुर आदि ने उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों को याद करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

शोक सभा आरंभ होने से पहले साहित्य अकादेमी द्वारा केदारनाथ सिंह पर अकादेमी द्वारा निर्मित फ़िल्म, जिसका निर्देशन के. विक्रम सिंह ने किया है, का प्रदर्शन किया गया।

श्रद्धांजलि सभा के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने साहित्य अकादेमी की तरफ़ से शोक संदेश प्रस्तुत किया। शोक सभा में केदारनाथ सिंह के पुत्र सुनील कुमार सिंह, उनकी पुत्री रचना सिंह, परिजन सहित प्रमुख साहित्यकार कवि, लेखक एवं पत्रकार भारी संख्या में उपस्थित थे।

स्व. केदारनाथ सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मैनेजर पांडेय

साहित्य मंच

10 अप्रैल 2018, ठाणे, महाराष्ट्र

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा 10 अप्रैल 2018 को ठाणे, महाराष्ट्र में 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन सिंधी कवि सभा के सहयोग से किया गया। सिंधी कवि हरि चोइथाणी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा एम.टी. गंगवाणी, भागचंद वेरहाणी 'भागल', परसराम टीकामणी 'परसल', हरभगवान भाटिया 'रहबर', हरदास पाहूजा 'दास', जीवन वाघवाणी, रोचल नागवाणी, सी. केसवाणी 'लाल', इंदिरा हृदयाणी, नेहा चावला, ठाकुरदास लोहाना 'लहरी' ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। सिंधी कवि सभा के सतराम मखीजा 'दलबर' ने कार्यक्रम का संचालन किया।

साहित्य मंच

साहित्य और अनुवाद : रचनात्मकता, संपर्क और कला

17 अप्रैल 2018, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव, हेंज़ वर्नल वेस्सलर (मध्य में) तथा अन्य विद्वान

साहित्य अकादेमी द्वारा 17 अप्रैल 2018 को नई दिल्ली के तृतीय तल स्थित सभाकक्ष में भारतविद्या के सुपरिचित विद्वान हेंज़ वर्नल वेस्सलर के साथ 'साहित्य मंच' कार्यक्रम आयोजित किया गया। उन्होंने 'साहित्य और अनुवाद : रचनात्मकता, संपर्क और कला' विषय पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि रचनात्मकता और कला को सामान्यतः सृजनात्मक लेखन से जोड़ा जाता है, लेकिन मेरा मानना है कि इसे अनुवाद से भी जुड़ना चाहिए तभी हम पाठकों को पसंद आने वाले अनुवाद का सृजन कर सकते हैं। ऑडियो विज़ुअल प्रस्तुति के साथ उन्होंने कई उदाहरण देते हुए बताया कि इंटरनेट पर उपलब्ध अनुवाद बहुत ही लचर और उबाऊ है। भाषा संबंधी ग़लतियाँ भी बेशुमार हैं। भारतीय और विशेषकर हिंदी साहित्य को विश्व स्तर पर लाने के लिए हमें अच्छे अनुवादों की आवश्यकता है और ऐसा तभी संभव है जब मूल भाषा से अनुवाद किए जाएँ और उसकी गुणवत्ता बनाए रखने के लिए उसकी कई स्तर पर जाँच हो। उन्होंने फ़रवरी में स्वीडन में हुई 'जर्मन-हिंदी अनुवाद कार्यशाला' का उल्लेख करते हुए कहा कि इस तरह के प्रयास दिल्ली में भी होने चाहिए जिससे हिंदी अनुवाद की एक उच्च परंपरा की शुरुआत हो और पाठकों तक उत्कृष्ट अनुवाद पहुँच सके। कार्यक्रम में उनके साथ स्वीडन में कार्यशाला में सम्मिलित रहीं दिल्ली विश्वविद्यालय की सहायक प्रोफ़ेसर नमिता खरे ने भी अपने अनुभव श्रोताओं से साझा किए। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित श्रोताओं ने कई प्रश्न भी किए। कार्यक्रम में निर्मला जैन, मंगलेश डबराल, रवींद्र त्रिपाठी, ओम निश्चल, विमलेश कांति वर्मा एवं एच. एस. शिवप्रकाश जैसे कई महत्त्वपूर्ण लेखक, अनुवादक एवं पत्रकार शामिल थे। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव एवं निर्मला जैन ने हेंज़ वर्नल वेस्सलर का स्वागत अंगवस्त्रम् एवं पुस्तक भेंट करके किया।

कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापित करते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने साहित्य अकादेमी द्वारा अनुवाद की गुणवत्ता सुधारे जाने के लिए किए जा रहे प्रयासों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि साहित्य अकादेमी का प्रमुख उद्देश्य अनुवाद के माध्यम से अकादेमी द्वारा पुरस्कृत श्रेष्ठ कृतियों को अन्य भारतीय भाषाओं में पहुँचाना है। अतः इस विषय पर कार्यक्रम बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

साहित्य मंच : बहुभाषी रचना-पाठ

19 अप्रैल 2018, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा अकादेमी सभाकक्ष में 'साहित्य मंच' कार्यक्रम शृंखला के अंतर्गत 'बहुभाषी रचना-पाठ' का आयोजन किया गया, जिसमें चार भाषाओं के रचनाकारों ने अपनी रचनाओं का पाठ किया।

चर्चित हिंदी कथाकार मनीष कुमार सिंह ने अपनी 'पढ़ा-लिखा सिरफिरा' शीर्षक कहानी का पाठ किया, जिसमें एक सच्चे लेखक की

मनीष कुमार सिंह, नोमान शौक़, विभा कुमारी तथा टासी शेर्पा (बाएँ से दाएँ)

सामाजिक उपेक्षा के दंश का चित्रण था। टासी शेर्पा और विभा कुमारी ने क्रमशः नेपाली और मैथिली भाषा की कविताओं का पाठ हिंदी अनुवाद के साथ किया। श्री शेर्पा की कविताओं में पुलिस पेशे का दर्द और गोरखा समाज के प्रति शेष भारतीय समाज के आम रवैये को बख़ूबी चित्रित किया गया था। विभा की कविताएँ स्त्री मन की पीड़ा के साथ उसकी सकारात्मक चेतना को अभिव्यक्त करने वाली थीं। अंत में उर्दू भाषा के प्रतिष्ठित शायर नोमान शौक़ ने अपनी नज़्मों और ग़ज़लों से सबका मन मोह लिया। आधुनिक जनजीवन की विसंगतियों को उनमें बख़ूबी उजागर किया गया था।

कार्यक्रम का संचालन और अंत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी देवेंद्र कुमार देवेश ने किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में साहित्यप्रेमी उपस्थित थे।

परिसंवाद : पुस्तकें, जिन्होंने बदला मेरा जीवन

23 अप्रैल 2018, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा अकादेमी सभागार में 23 अप्रैल 2018 को विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर 'पुस्तकें, जिन्होंने बदला मेरा जीवन' विषयक परिसंवाद का आयोजन किया गया, जिसमें साहित्येतर क्षेत्र की आठ प्रतिष्ठित शख़्सियतों ने पुस्तकों से जुड़े अपने अनुभव साझा किए।

कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी अतिथियों को पुस्तकें और अंगवस्त्रम् भेंट करके स्वागत एवं अभिनंदन किया। उन्होंने अपने स्वागत भाषण में कहा कि पुस्तकें मनुष्य की सबसे अंतरंग साथी हैं और जीवन को समझने और जीने का सलीका सिखाती हैं। वास्तव में किताबें हमारी सच्ची मार्गदर्शक हैं। वक्ताओं में नृत्यांगना सोनल मानसिंह, चित्रकार जतिन दास, रंगकर्मी राजेंद्रनाथ, कार्टूनिस्ट राजेंद्र धोड़पकर, सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारी मनोहर बाथम, चिकित्सक देश दीपक, वरिष्ठ प्रशासक सुजाता प्रसाद एवं न्यूज़ एंकर सईद अंसारी शामिल थे। अधिकांश वक्ताओं ने बचपन में पढ़ी गई पत्रिकाओं, पुस्तकों से आरंभ कर अपनी प्रेरक पुस्तकों की चर्चा की। ऐसी किताबों में *महाभारत,* महात्मा गाँधी की आत्मकथा, प्रेमचंद की कहानियाँ प्रमुख थीं।

सबसे पहले प्रतिष्ठित चिकित्सक देश दीपक ने कहा कि उनके बचपन में जिस पहली पुस्तक ने उन्हें सबसे ज़्यादा प्रभावित किया, वह किताब रूसी लोककथा पर आधारित थी।

चित्रकार जतिन दास ने दिलीप चित्रे एवं अन्य कवि मित्रों की काव्य पुस्तकों का उल्लेख किया तथा कहा कि हम कलाकार लोग पुस्तकों से ज़्यादा प्रकृति को पढ़ते हैं। मनोहर बाथम ने अर्नेस्ट हेमिंग्वे की पुस्तक *ओल्ड मैन एंड द सी* का उल्लेख करते हुए कहा कि इस किताब ने उनके नज़रिए को बदला तथा उनके जीवन-संघर्ष में मनोबल को बनाए रखने में मदद की। राजेंद्र धोड़पकर ने कहा कि उनको प्रभावित करनेवाली पुस्तकों की एक लंबी सूची है, लेकिन वे हाल के दिनों में पढ़ी गई डेविड शेफर्ड की आत्मकथात्मक पुस्तक से बेहद प्रभावित हैं, जिसने यह उम्मीद जगाई है कि धर्म का चेहरा भी प्रगतिशील, उदात्त और उदार हो सकता है, क्योंकि धर्म का इतिहास प्रगतिशील रेडिकल लोगों का इतिहास है।

सईद अंसारी ने अपने जीवन से जुड़े अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि पुस्तक पढ़ना कभी व्यर्थ नहीं जाता, उनसे प्राप्त ज्ञान और अनुभव कभी-न-कभी काम अवश्य आते हैं। राजेंद्रनाथ ने अनेक पुस्तकों का संदर्भ देते हुए कहा कि किताबें प्रभावित अवश्य करती हैं लेकिन उनके प्रभाव एक लंबे समय के बाद महसूस होते हैं।

सुजाता प्रसाद ने कहा कि पढ़ना बचपन से ही उनकी दिनचर्या का एक हिस्सा रहा है। उन्होंने कई देशी-विदेशी लेखकों का उल्लेख करते हुए कहा कि हिंदी में उन्हें प्रेमचंद, मुक्तिबोध और निर्मल वर्मा ने बेहद प्रभावित किया है।

प्रसिद्ध नृत्यांगना सोनल मानसिंह ने कहा कि उन्हें सबसे ज़्यादा *महाभारत* ने प्रभावित किया, जिसका असर उनकी नृत्य-प्रस्तुतियों में भी देखा जा सकता है। अपने विदेश प्रवास के एक विरल अनुभव को भी उन्होंने साझा किया कि किस प्रकार एक अच्छी पुस्तक ने उनके साथ कुछ बुरा होने से उन्हें बचाया। उन्होंने कबीर, मीरां, जयदेव आदि संत कवियों के प्रभाव को भी स्वीकार किया तथा कहा कि किताबें उनकी सखियाँ हैं।

कार्यक्रम का संचालन और अंत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।

सोनल मानसिंह, के. श्रीनिवासराव, देश दीपक, मनोहर बाथम, राजेंद्र धोड़पकर तथा सईद अंसारी (बाएँ से दाएँ)

साहित्य मंच

23 अप्रैल 2018, चेन्नै

विश्व पुस्तक दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के प्रतिभागी

साहित्य अकादेमी के चेन्नै कार्यालय द्वारा 23 अप्रैल 2018 को 'विश्व पुस्तक दिवस' के अवसर पर 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्री मालन ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा स्वागत भाषण में उन्होंने यह उल्लेख किया कि 'विश्व पुस्तक तथा कॉपीराइट डे' को अंग्रेज़ी कवि तथा नाटककार विलियम शेक्सपीयर के जन्म और मृत्यु की सालगिरह के रूप में मनाया जाता है।

के. चेल्लप्पन ने कहा कि 'विश्व पुस्तक दिवस' मनाने का उद्देश्य पढ़ने की अच्छी आदतों को पैदा करना है। संध्या नटराजन और आर. वेंकटेश ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

परिसंवाद : प्राचीन ग्रंथों में स्वच्छता की अवधारणा

24 अप्रैल 2018, नई दिल्ली

अनुपम तिवारी, संत बलवीर सिंह सीचेवाल, के. श्रीनिवासराव, कपिल कपूर, बल्देवभाई शर्मा एवं फ़रीदा ख़ानम (बाएँ से दाएँ)

साहित्य अकादेमी द्वारा 24 अप्रैल 2018 को साहित्य अकादेमी के सभाकक्ष में 'प्राचीन ग्रंथों में स्वच्छता की अवधारणा' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया, जिसका उद्‌घाटन वक्तव्य राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अध्यक्ष बल्देवभाई शर्मा तथा अध्यक्षीय वक्तव्य भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के अध्यक्ष कपिल कपूर द्वारा दिया गया। इस विषय पर बोलने वाले प्रतिभागी थे– बलवीर सिंह सीचेवाल, फ़रीदा ख़ानम, वीर सागर जैन, विजय कुमार, निरंजन देव भारद्वाज।

अपने उद्‌घाटन वक्तव्य में बल्देवभाई शर्मा ने कहा कि मन का परिष्कार ही स्वच्छता है और हमारे सभी धर्म ग्रंथों में शुचिता यानी स्वच्छता को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। धर्म के 10 लक्षणों में शुचिता भी एक है। मन, वचन और कर्म तीनों ही शुद्ध हो जाने पर जीवन स्वयं ही शुद्ध हो जाता है। उन्होंने कहा कि अपनी जड़ों, अपनी परंपराओं की ओर लौटना आज बहुत ज़रूरी हो गया है। आगे उन्होंने कहा कि आंतरिक शुद्धि के साथ-साथ बाह्य शुद्धि भी अत्यंत आवश्यक है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष कपिल कपूर ने कहा कि तथाकथित आधुनिक विकास ने प्रकृति से हमारे संतुलन को बिगाड़ दिया है, जिसके ज़िम्मेदार हम स्वयं ही हैं। हमारी प्राचीन संस्कृति में विचार, आचार और व्यवहार तीनों की शुद्धता पर ज़ोर दिया गया है। लेकिन आज इनमें से कोई भी चीज़ शुद्ध नहीं रही है। आगे उन्होंने कहा कि हमारे ग्रंथों में कहा गया है कि जल हमारे शरीर को साफ़ करता है, ज्ञान से बुद्धि परिष्कृत होती है, अहिंसा से जीवात्मा शुद्ध होती है और हमारा मन सत्यता से शुद्ध होता है, लेकिन अब हम इन सारी चीज़ों को परिष्कृत करना भूल गए हैं। यह अपनी परंपराओं को भूलने जैसा है।

कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि सभी धर्मों के मूल में स्वच्छता का महत्त्वपूर्ण स्थान है किंतु वर्तमान में हम मन और तन दोनों की शुद्धता का ख़याल नहीं रख पा रहे हैं। हमें स्वच्छता को अपने जीवन में व्यापक रूप से स्थान देना होगा तभी हम पृथ्वी पर मँडरा रहे इस बड़े संकट से मुक्त हो पाएँगे। संत बलवीर सिंह सीचेवाल ने *गुरुग्रंथ साहिब* से उदाहरण देते हुए कहा कि गुरुनानक जी 550 साल पहले भी हवा, पानी और प्रकृति को प्रदूषित न करने की चिंता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि उस समय प्रकृति से हमारे संबंध इतने मानवीय थे कि हम उसको भी जीव के रूप में मानते थे और पारिवारिक रिश्तों की तरह ही उससे निर्वाह करते थे। यह संबंध आज ख़त्म से हो रहे हैं जिसका परिणाम है – पर्यावरण प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग।

वीर सागर जैन एवं संत बलवीर सिंह सीचेवाल (बाएँ से दाएँ)

विजय कुमार एवं निरंजन देव भारद्वाज (बाएँ से दाएँ)

फ़रीदा ख़ानम

कपिल कपूर

फ़रीदा ख़ानम ने कहा कि हदीस के मुताबिक़ अल्लाह पाक है और पाक लोगों को ही पसंद करता है। उन्होंने कहा कि इस्लाम में सफ़ाई अर्थात् स्वच्छता ईमान का हिस्सा है। उन्होंने पवित्र क़ुरान से कई उदाहरण देते हुए बताया कि हमें प्रकृति से उतना ही लेना चाहिए जितने की ज़रूरत हो। ऐसी समझ ही पर्यावरण का संतुलन बना सकती है। वीर सागर जैन ने प्राचीन जैन धर्म ग्रंथों के हवाले से बताया कि जैन धर्म की मुख्य पहचान 'अहिंसा' भी एक तरह से स्वच्छता का ही दूसरा रूप है। जैन धर्म में पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और समस्त प्रकृति को मानव रूप में मानते हुए उसकी वैसे ही सुरक्षा करने की बातें कही गई हैं जैसे हम स्वयं की सुरक्षा करते हैं। उन्होंने कहा कि जैन आचार्यों ने हमेशा पृथ्वी पर उपलब्ध सभी संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करने की शिक्षा दी है।

विजय कुमार ने कहा कि भगवान बुद्ध ने आंतरिक स्वच्छता पर अधिक ध्यान दिया था लेकिन बाह्य शुद्धि की भी उपेक्षा नहीं की, उनकी शिक्षाओं में आंतरिक एवं बाह्य दोनों शुद्धियों की प्रेरणा मिलती है। निरंजन देव भारद्वाज ने वेदों, उपनिषदों और स्मृति ग्रंथों से स्वच्छता के संबंध में अनेक उदाहरण देते हुए कहा कि स्वच्छता हमारे धर्म और संस्कृति का अहम हिस्सा रही है। आधुनिक समय में विकास की दौड़ में हम अपने प्राचीन जीवन मूल्यों को भूल गए हैं, जिसका परिणाम है—हम पर्यावरण असंतुलन और उससे पैदा हो रही मुश्किलों का सामना कर रहे हैं। कार्यक्रम के अंत में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

स्वच्छता पखवाड़ा

25 अप्रैल 2018, कोलकाता

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में 25 अप्रैल 2018 को स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ कर्मचारियों द्वारा शपथ ग्रहण से हुआ। तत्पश्चात् समस्त कर्मचारियों ने क्रमशः कार्यालय परिसर तथा अपने कार्य-स्थलों की सफाई की। सफाई अभियान के पश्चात् प्रश्न मंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का संचालन क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा किया गया। प्रतियोगिता के निर्णायक तड़ित रायचौधुरी थे।

इस प्रतियोगिता में सुजॅय धर, मयूख चौधुरी तथा सुमन मंडल क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर रहे।

प्रतियोगिता के पश्चात् रायचौधुरी ने पॉवर प्वाइंट प्रस्तुति द्वारा भारत की वर्तमान पर्यावरणीय स्थिति पर अकादेमी सभागार में व्याख्यान प्रस्तुत किया। स्वच्छता पखवाड़ा में शपथ से पूर्व मिहिर कुमार साहु ने वक्ता का श्रोताओं से परिचय कराया। प्रोफ़ेसर रायचौधुरी ने भूजल के संतुलन को बनाए रखने के महत्त्व पर बल दिया और भूजल के दुरुपयोग से होने वाले पर्यावरणीय ख़तरों के बारे में बताया। उन्होंने विश्व के विभिन्न हिस्सों में भूजल के प्रतिशत को दर्शाया तथा यह भी बताया कि किस प्रकार से दिन-ब-दिन भूजल का स्तर घटता एवं दूषित होता जा रहा है। उन्होंने दक्षिण-पूर्व एशिया के विभिन्न भागों में बढ़ते आर्सेनिक तथा फ्लोराइड की मात्रा की भी चर्चा की। प्रस्तुति के बाद एक प्रश्नोत्तरी सत्र हुआ। कार्यक्रम के अंत में सहायक संपादक गौतम पॉल ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

पुस्तक चर्चा

26 अप्रैल 2018, चेन्नै

साहित्य अकादेमी ने चेन्नै कार्यालय परिसर में 26 अप्रैल 2018 को 'पुस्तक चर्चा' कार्यक्रम का आयोजन किया। चर्चा के लिए चुनी गई पुस्तक *पिनई कैधी* थी, साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत इस उपन्यास को काशीनाथ सिंह ने लिखा है तथा इसका तमिळ अनुवाद एम. ज्ञानम ने किया है। प्रख्यात हिंदी विद्वान पी.के. बालसुब्रह्मण्यन को चयनित पुस्तक पर अपने विचार व्यक्त करने हेतु आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम सहायक टी.एस. चंद्रशेखर राजू ने स्वागत भाषण दिया। पी.के. बालसुब्रह्मण्यन ने कहा कि यह उपन्यास आधुनिक संदर्भ में रिश्तों की कहानी की खोज करता है। कहानी एक समकालीन मध्यम वर्ग के व्यक्ति रघुनाथ की एक बेजोड़ कथा है, जिसका वंशज अपनी जीवन-शैली और हितों की खोज में अलग हो

पी. के. बालसुब्रह्मण्यन

गया। इस उपन्यास में यह उल्लिखित है कि हम अपने जीवनकाल में जो संबंध बनाते हैं, वे हमारे रक्त संबंधों के मुक़ाबले अधिक भरोसेमंद और लायक़ होते हैं। उनके व्याख्यान के पश्चात् एक संक्षिप्त चर्चा का सत्र हुआ।

स्वच्छता पखवाड़ा

27 अप्रैल 2018, चेन्नै

चेन्नै कार्यालय द्वारा 16 से 30 अप्रैल 2018 के मध्य आयोजित स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत 27 अप्रैल 2018 को *मंगायर मालर* की संपादक जी. मीनाक्षी को 'साहित्य में स्वच्छता की अवधारणा' विषय पर व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किया गया।

कार्यक्रम सहायक टी.एस. चंद्रशेखर राजू ने स्वागत भाषण दिया। अपने संक्षिप्त व्याख्यान में जी. मीनाक्षी ने तमिळ कालजयी काव्य कृति *नत्रिनई* तथा *तिरुक्कुरल* से कुछ उद्धरण तथा कुछ कविताएँ प्रस्तुत कीं, जिनमें शिष्टाचार, स्वच्छता, मनुष्य के जीवन – सार्वजनिक और निजी, विनम्र व्यवहार और अच्छी आदतों को अपनाने के शिष्टाचार के नियम शामिल थे। उन्होंने श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर भी दिए। कई स्थानीय साहित्यप्रेमी भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में 'स्वच्छता पखवाड़ा' के अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं के सफल प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार वितरित किए गए।

ओड़िया गीतों पर परिसंवाद

29 अप्रैल 2018, कटक

साहित्य अकादेमी ने ओड़िया गीतिकवि समाज के सहयोग से 29 अप्रैल 2018 को शताब्दी भवन, कटक में ओड़िया गीतों पर एक परिसंवाद का आयोजन किया। प्रख्यात कवि एवं साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य अमरेश पट्टनायक ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। वंदना-गीत निशिधा पाधी ने प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी, कोलकाता के कार्यालय प्रभारी मिहिर कुमार साहु ने स्वागत भाषण दिया।

मनोज पट्टनायक, कीर्तन नारायण पाधी, अमरेश पट्टनायक, देवाशीष पाणिग्रही, विजयानंद सिंह तथा मिहिर कुमार साहु (बाएँ से दाएँ)

साहित्य अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक विजयानंद सिंह ने अपने आरंभिक व्याख्यान में गीत-कविता के महत्त्व पर बल दिया। गीतिकविता के प्रख्यात विद्वान कीर्तन नारायण पाधी ने बीज-भाषण दिया। उन्होंने कहा कि कविता का आरंभ गीतिकविता से हुआ। ओड़िया गीतिकविता सामवेद से प्रारंभ हुई।

पाधी ने संक्षेप में गीतिकविता के उद्भव तथा विकास के बारे में भी बताया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि देवाशीष पाणिग्रही, आई.पी.एस. ने अपने व्याख्यान में कहा कि गीतिकविता की रचना उतनी आसान नहीं है जैसी वह दिखती है। गीत साहित्य और संगीत का मिश्रण है। अमरेश पट्टनायक ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि गीत और कविता साहित्य को उत्कृष्ट बनाते हैं। कार्यक्रम के अंत में ओड़िया गीतिकवि समाज के सचिव मनोज पट्टनायक ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रथम सत्र में गीतकार गौर पट्टनायक ने अपना आलेख 'गीतिकविता तथा ओड़िया गीतिकविता के उत्स एवं विकास' पर प्रस्तुत किया। गोविंद चंद ने अपना आलेख समकालीन गीत कवियों पर प्रस्तुत किया। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में मालविका राय ने कहा कि श्रेष्ठ कविता मानव के हृदय को छूती है तथा वह मानव की स्मृति में सदा के लिए बस जाती है।

द्वितीय एवं अंतिम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात गीतकार गौरहरि दलाई ने की। मीनाक्षी देवी ने अपने आलेख का आरंभ महान गीतकार बिनोदिनी देवी के कार्यों की चर्चा से किया। उन्होंने प्राचीन गीतिकविता पर अपने विचार व्यक्त किए तथा *अमरकोश* की भी चर्चा की। गीतिकविता छोटी घटनाओं अथवा भावनाओं पर आधारित होती हैं। श्रीचरण मोहांती ने 'साबुजा गीतिकविता तथा समकालीन गीतकारों पर उसके प्रभाव' पर चर्चा की। सत्र के अंत में संध्या मित्रा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

मुलाक़ात

29 अप्रैल 2018, कटक

साहित्य अकादेमी ने 29 अप्रैल 2018 को शताब्दी भवन, कटक में ओड़िया लेखकों के साथ 'मुलाक़ात' कार्यक्रम का आयोजन किया। ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक विजयानंद सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यक्रम के प्रारंभ में मिहिर कुमार साहु ने मुलाक़ात कार्यक्रम के आयोजन के उद्देश्य के बारे में श्रोताओं को बताया। उन्होंने ओड़िशा के विभिन्न भागों से मुलाक़ात कार्यक्रम में सम्मिलित होने आए 6 युवा लेखकों का स्वागत किया। झारसुगुड़ा से आए युवा कवि अनिल कुमार दाश ने अपनी दो कविताएँ प्रस्तुत कीं। उन्होंने एक संबलपुरी कविता

अनिल कुमार दास, शुभ्रजीत राय, मानिनी मिश्र, विजयानंद सिंह, मिहिर कुमार साहु, अशोक पुहन, रविनारायण दास, मातृदत्ता मोहांती (बाएँ से दाएँ)

भी प्रस्तुत की। आनंदपुर, क्योंझर से आए कवि अशोक पुहन ने अपनी कविता 'निज लोक' प्रस्तुत की। उन्होंने दो और कविताएँ भी प्रस्तुत कीं। उनकी कविताएँ प्रेम पर आधारित थीं। बरपाली, संबलपुर से आई मानिनी मिश्र ने तीन कविताएँ प्रस्तुत कीं। केंद्रपाड़ा से आए मातृदत्ता मोहांती ने अपनी कहानी 'अध्यारानी' प्रस्तुत की। श्रोताओं ने इस कहानी की ख़ूब सराहना की। जगतसिंहपुर से आए रविनारायण दास ने अपनी कहानी 'भाला बापा कहाकु कहांति' प्रस्तुत की। भुवनेश्वर से आए शुभ्रजीत राय ने अपनी दो कविताएँ 'भाटा' और 'फाइलिन' प्रस्तुत कीं।

अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में विजयानंद सिंह ने समस्त लेखकों तथा कवियों की मुलाक़ात कार्यक्रम में विशेष रुचि दिखाने हेतु प्रशंसा की। उन्होंने यह भी आशा व्यक्त की कि साहित्य अकादेमी ओड़िया के युवा लेखकों को प्रेरित करने हेतु ऐसे और कई कार्यक्रमों का भी आयोजन करेगी। ओड़िया परामर्श मंडल के सदस्य तरुण कुमार साहु ने कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापित किया।

मेरे झरोखे से : अर्चना नायक पर अपर्णा मोहांती का व्याख्यान

30 अप्रैल 2018, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी द्वारा 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम का आयोजन 30 अप्रैल 2018 को स्टेट आर्काइव्स, भुवनेश्वर में किया गया। अकादेमी पुरस्कार विजेता अपर्णा मोहांती ने प्रख्यात ओड़िया लेखिका अर्चना नायक पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने डॉ. नायक के दार्शनिक और संपूर्ण रचनात्मक साहित्यिक कार्यों के संदेश की गंभीर समीक्षा की। जैसा कि आमतौर पर कहा जाता है कि महिलाओं के जीवन को समझना मुश्किल है ऐसे ही डॉ. नायक के कार्य हैं। दृढ़संकल्प और नम्रता के साथ-साथ महिलाओं की मुक्ति के आंतरिक संदेश उनकी रचनाओं में नज़र आता है। वह एक उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार, वक्ता, कवयित्री, कुशल शिक्षक, दार्शनिक तथा एक उत्कृष्ट इंसान हैं। उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन का आरंभ अपने विद्यार्थी जीवन से किया और सम्मान के शिखर तक पहुँच गईं। वे आधुनिक ओड़िया साहित्य लेखन में महिला लेखन का प्रतिमान हैं।

उनका लोकप्रिय कार्य महिला बौद्ध भिक्षुओं पर है जिन्होंने ज्ञान, मुक्ति, मोक्ष और निर्वाण की खोज में अपना आराम और घर त्याग दिया, किंतु इन महिला बौद्ध भिक्षुओं को अपकर्ष का सामना करना पड़ा। डॉ. नायक ने इस पर सवाल उठाया। उपन्यास में उनका सवाल यह था कि क्या महिलाएँ अपघटन के लिए ज़िम्मेदार हैं। प्रश्न न केवल आज के संदर्भ में प्रासंगिक है बल्कि धर्म सहित पितृसत्तात्मक प्रणाली के लिए भी एक चुनौती है। समानता और ज्ञान के लिए महिलाओं की प्रतिबद्धता और बलिदान पुरुषों के मुक़ाबले अधिक है।

रानी श्यामावती डॉ. नायक का पुनर्सृजन है जिसमें उन्होंने महिलाओं को और उनके बलिदान को पितृसत्तात्मक सोच से बाहर लाने की कोशिश की। यहाँ तक कि रानी भी इस सोच की शिकार है। उनके द्वारा *महापात्र नीलमणि साहु* की लिखित जीवनी सिर्फ़ ओड़िशा का ही सराहनीय कार्य नहीं है बल्कि जिसकी तुलना अरबिन्दो और नीत्से से की गई है।

उन्होंने एक वृहत्तर भावना विकसित की है जो उनके कार्यों में लक्षित की जा सकती है। 16 कहानी-संग्रह, 2 उपन्यास, 5 नाटक, 16 जीवनियों एवं निबंध-संग्रहों, अनुसंधान, शिक्षण, परिवार, जगन्नाथ संस्कृति पर व्याख्यान, अरबिंदो के दर्शन आदि पर लेखन/चिंतन के साथ वे ओड़िया साहित्य के इतिहास की महान हस्ती बन गई हैं।

अपर्णा मोहांती, अर्चना नायक, विजयानंद सिंह एवं मिहिर कुमार साहु (बाएँ से दाएँ)

नए प्रकाशन

असमिया

द्वैपायन ह्रदेर परत
ले. सुबोध सरकार, अनु. एम. कमालुद्दीन अहमद
पृ. 70, रु. 130/-
ISBN : 978-93-87567-43-6

रवींद्रनाथ टैगोर
ले. शिशिर कुमार घोष, अनु. पल्लवी डेका बेजबरुआ
पृ. 142, रु. 50/-
ISBN : 978-93-87567-46-7

बाङ्ला

योगेश चंद्र राय विद्यानिधि
ले. अरबिंदो चटर्जी
पृ. 136, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4894-6

बोडो

पद्मा दयमणि डिंगरी
ले. मानिक वंद्योपाध्याय, अनु. गोबिंद बसुमतारी
पृ. 160, रु. 170/-
ISBN : 978-93-87567-29-0

अंग्रेज़ी

माधवराम वाहेङ्बा
ले. था. इबोहांबी सिंह
पृ. 68, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4738-3

क्रौंच पक्षिगलु एंड अदर स्टोरीज़
ले. वैदेही, अनु. सुशीला पुनीता
पृ. 116, रु. 120/-
ISBN : 978-93-87567-75-7

वीमेन एंड देयर वर्ल्ड : लिटरेचर फ्रॉम ईस्टर्न इंडिया
चयन एवं संपादन सिंजिनी बंद्योपाध्याय
पृ. 156, रु. 200/-
ISBN : 978-93-87567-49-8

पुरदाह एंड पोलीगैमी
ले. इक़बालुन्निसा हुसैन, संपादन निशात ज़ैदी
पृ. 296, रु. 220/-
ISBN : 978-93-86771-86-5

ग्रैटिट्यूट फ़ॉर लिविंग
ले. सीताकांत महापाज
पृ. 22, रु. 25/-, ISBN : 978-93-87567-48-1

द हिमालया ए कल्चरल पिलग्रिमेज (पुनर्मुद्रण)
ले. दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर, अनु. अशोक मेघानी
पृ. 288, रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-4262-3

सान्स ऑफ़ पुरनदरादसा (पुनर्मुद्रण)
चयन एवं अनु. मीदुर रघुनंदना
पृ. 158, रु. 95/-
ISBN : 978-81-260-3134-4

डोगरी शॉर्ट स्टोरीज़ टुडे (पुनर्मुद्रण)
चयन एवं सं. ललित मगोत्रा, अनु. सुमन के. शर्मा
पृ. 274, रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-4747-5

अमृत संतान (पुनर्मुद्रण)
ले. गोपीनाथ मोहंति, अनु. विधुभूषण दास, प्रभात नलिनी दास, उपालि अपराजिता
पृ. 640, रु. 400/-
ISBN : 978-81-260-4743-3

श्री रामायण दर्शनम (पुनर्मुद्रण)
ले. के.वी. पुट्टपा 'कुवेंपु'
अनु. शंकर मोकाशि पुणेकर
पृ. 684, रु. 560/-
ISBN : 978-81-260-1728-7

इम्पेरर-पोएट श्री कृष्णदेवार्याज़ अमुक्तमाल्यदा (पुनर्मुद्रण)
ले. श्री कृष्णादेवार्या, अनु. सी.वी. रामचंद्र राव
पृ. 344, रु. 230/-
ISBN : 978-81-260-3145-x

हिंदी

अवतार चरित्र (खंड-1) (पुनर्मुद्रण)
सं. भानवर्द्धन रत्नु मधुकर
पृ. 726, रु. 700/-
ISBN : 978-81-260-4885-4

अवतार चरित्र (खंड-2) (पुनर्मुद्रण)
सं. भानवर्द्धन रत्नु मधुकर
पृ. 731, रु. 765/-
ISBN : 978-81-260-4556-1

लघु कथा-संग्रह (खंड-1) (पुनर्मुद्रण)
सं. जयमंत मिश्र, अनु. रेखा व्यास
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-1219-0

मीराबाई (वि.) (पुनर्मुद्रण)
ले. ब्रजेंद्र कुमार सिंहल
पृ. 120, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5058-1

सुनो कहानी (पुनर्मुद्रण)
ले. विष्णु प्रभाकर
पृ. 60, रु. 25/-
ISBN : 81-7201-092-3

भारतीय बाल कहानियाँ (भाग-1) (पुनर्मुद्रण)
ले. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 100, रु. 96/-
ISBN : 978-81-260-2676-0

हिंदी कहानी-संग्रह (पुनर्मुद्रण)
सं. भीष्म साहनी
पृ. 384, रु. 150/-
ISBN : 978-81-7201-657-9

कन्नड

कंपना मापकागले वंदने
ले. सी. राधाकृष्णन, अनु. ना. दामोदर शेट्टी
पृ. 572, रु. 410/-
ISBN : 978-93-87567-58-0

सत्पत्रा
ले. गाडियराम रामकृष्ण शर्मा, अनु. आर. शेषा शास्त्री
पृ. 456, रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-5255-4

प्रेमचंद : कलम का सिपाही
अनु. तिप्पेस्वामी
पृ. 684, रु. 410/-
ISBN : 978-93-87567-42-9

कश्मीरी

जोमे सुबास मंज़ कसूर ज़बान ओ अदबुक तवारीख
ले. मंसूर बानिहाली
पृ. 448, रु. 420/-
ISBN : 978-93-87567-32-0

मैथिली

अमृतक संतान
ले. गोपीनाथ मोहंति, अनु. रमाकांत राय 'राम'
पृ. 568, रु. 390/-
ISBN : 978-93-87567-17-7

दक्षिण कामरूपक कथा *(पुनर्मुद्रण)*
ले. इंदिरा गोस्वामी, अनु. आशा मिश्र
पृ. 320, रु. 280/-
ISBN : 978-93-87567-15-0

स्मरनगाथ *(पुनर्मुद्रण)*
ले. जी.एन. दांडेकर, अनु. शिखा गोयल
पृ. 456, रु. 370/-
ISBN : 978-93-87567-36-8

मलयाळम्

रामधारी सिंह दिनकर (वि.) *(पुनर्मुद्रण)*
ले. विजेंद्र नारायण सिंह, अनु. पी.के.पी. कर्था
पृ. 132, रु. 50/-, ISBN : 978-93-87567-64-1

कट्टीयेरीयुन्ना पुन्नथोरम
ले. सलीम, अनु. एल.आर. स्वामी
पृ. 216, रु. 245/-
ISBN : 978-93-87567-63-4

कल्माराम
ले. जी. तिलकावती, अनु. शफी चेरुमविळयी
पृ. 144, रु. 185/-
ISBN : 978-93-87567-65-8

मणिपुरी

अङ्गौबा चितिकाव
ले. मोती नंदी, अनु. एन. बिद्यासागर सिंह
पृ. 132, रु. 170/-
ISBN : 978-93-87567-11-5

मराठी

राजवाडे लेख-संग्रह *(पुनर्मुद्रण)*
सं. तर्कनीरथा लक्ष्मणशास्त्री जोशी
पृ. 344, रु. 350/-
ISBN : 978-81-7201-277-2

अशि धारातिची माया *(पुनर्मुद्रण)*
ले. शिवराम कारंत, अनु. आर. एस. लोकापुर
पृ. 352, रु. 350/-
ISBN : 978-81-7201-306-X-3

समकालीन सिंधी कथा (1980-2005)
सं. प्रेम प्रकाश, अनु. गोरख थोरात
पृ. 332, रु. 350/-
ISBN : 978-93-87567-00-9

प्रेमचंद यंचया निवादक गोष्ठी-1 *(पुनर्मुद्रण)*
अनु. बाबा भांड
पृ.- 104, रु. 60/-
ISBN : 978-81-260-1961-1

मराठी लोकगीति : संस्कृति अब्यासाची साधने (पुनर्मुद्रण)
सं. रमेश वारखेड़े
पृ. 244, रु. 190/-
ISBN : 978-81-260-3119-1

कोंकणी कथा मराथिट
सं. किरण बुदकुले
पृ. 204, रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-2034-2

अथंग
ले. बिंद्या शुभा,
अनु. आसावादी काकडे
पृ. 132, रु. 125/-
ISBN : 978-93-87567-02-3

दुर्गा भागवत
ले. शुभा नायक
पृ. 132, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4152-7

प्रतिनिधिक कन्नड कथा
ले. अमृत यार्डी, अनु. अनेक
पृ. 384, रु. 450/-
ISBN : 978-81-260-3261-7

ओड़िया

कैंडिड
ले. बॉल्तेयर,
अनु. शकुंतला बालियारसिंग
पृ. 126, रु. 190/-
ISBN : 978-93-86777-69-8

पत्थर फिंगुची मुन
ले. चंद्रकांत देवताले
अनु. सुरेंद्र पाणिग्रही
पृ. 176, रु. 240/-
ISBN : 978-93-87567-19-1

ओड़िया शिशु किशोर कहानी
सं. बीरेंद्र मोहंति
पृ. 288, रु. 190/-
ISBN : 978-81-260-4424-5

पंजाबी

खुआर औरतां
ले. मालती राव, अनु. प्रवेश शर्मा
पृ. 248, रु. 220/-
ISBN : 978-93-86771-98-8

तमिळ

सिंगारावेलार (विनिबंध) *(पुनर्मुद्रण)*
ले. पा. वीरामणि
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-93-86771-27-8

उमारू पुलावर (विनिबंध) *(पुनर्मुद्रण)*
ले. नयनार मोहम्मद
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2200-0

थिरुग्नानासंबदार (विनिबंध) *(पुनर्मुद्रण)*
ले. एस. वेंकटरामन
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2368-6

सुवारिल ओरु जन्नल इरुंधु वंधादु (पुरस्कृत हिंदी उपन्यास) *(पुनर्मुद्रण)*
ले. विनोद कुमार शुक्ल
अनु. एन. कामाची धराणी शंकर
पृ. 256, रु. 200/-
ISBN : 978-93-87567-26-9

थुलिप्पा : नूरांदुगलिल (परिसंवाद आलेख)
सं. आर. संबथ
पृ. 256, रु. 200/-
ISBN : 987-93-87567-27-6

वनोली तमिष़् नाटका इलाक्कियम
सं. स्टालिन
पृ. 192, रु. 180/-
ISBN : 978-93-87567-40-5

भगवान बुद्धर (द्वितीय संस्करण)
ले. धर्मानंदा कोशांबी, अनु. का. श्रीश्री
पृ. 336, रु. 270/-
ISBN : 978-93-87567-35-1

पेद्दिभोट्ला सुब्बरामय्या कथाईगल
ले. पद्दिभोट्ला सुब्बरामय्या, अनु. मधुमिता
पृ. 496
ISBN : 978-93-87567-34-4

प्रपंचन मेद्दईप्पुलगम
सं. महारंदन
पृ. 256, रु. 310/-
ISBN : 978-93-8567-38-2

मन्नुम मनिथारूम (पुरस्कृत कन्नड उपन्यास)
ले. शिवराम कारंत, अनु. टी. बी. सिद्धलिंगय्या
पृ. 648, रु. 485/-
ISBN : 978-93-87567-57-3

तमिष़ इलाकिक्या वरालुरु (पुनर्मुद्रण)
ले. मु. वरदरासन
पृ. 456, रु. 225/-
ISBN : 978-81-720-1164-4

का. अयोतिदासा पंडितर (पुनर्मुद्रण)
ले. गौतम सन्नाह
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2466-6

चेम्मिन (पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास) (पुनर्मुद्रण)
ले. तकषि शिवशंकर पिळ्ळै, अनु. सुंदरा रामासामी
पृ. 320, रु. 240/-
ISBN : 978-81-260-0713-3

मनोनमनीयम सुंदरम पिल्लै (पुनर्मुद्रण)
ले. ना. वेलुसामी
पृ. 144, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-1129-7

कंबन (पुनर्मुद्रण)
ले. महाराजन
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN : 978-81-7201-636-0

कविंगनार कन्नदासन (पुनर्मुद्रण)
ले. एम. बालसुब्रमणियम्
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-1721-X

सूरथा (पुनर्मुद्रण)
ले. आर. कुमारवेलन
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-3349-2

तोळकप्पियार
ले. तमिष़नाळ
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0056-2

ना. पिषामूर्ति
ले. अशोक मित्रन
पृ. 80, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-1546-2

अव्वैयार
ले. तमिष़नाळ
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0057-0

नमक्काल रामालिंगम पिल्लै
ले. के. आर. हनुमंत
पृ. 144, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0900-4

तमिष़वेल उमामागेश्वरानार
ले. संबाशिवनार
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-1632-9

मानिक्कावासागर
ले. वनामिकानाथन
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2884-9

तेलुगु

स्पंदनामापनुलकु धन्यवादुलु
(पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास)
ले. सी. राधाकृष्णन्, अनु. एल. आर. स्वामी
पृ. 492, रु. 365/-
ISBN : 978-93-87567-39-9

बुज्जि पत्थेडरु
ले. पुण्य प्रभादेवी, अनु. चागंटि तुलसी
पृ. 64, रु. 50/-
ISBN : 978-93-87567-3

बंडारु अच्चामांबा
ले. एन. अनंतलक्ष्मी
पृ. 118, रु. 50/-
ISBN : 978-93-87567-20-7

उर्दू

आज का कश्मीरी अफ़साना
सं. शफी शौक़, अनु. अल्ताफ अंजुम
पृ. 168, रु. 190/-
ISBN : 978-93-87567-33-7

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित अन्य कार्यक्रम

दिनांक	स्थान	कार्यक्रम
8 मार्च 2018	कोलकाता	नारी चेतना
12 मार्च 2018	कोलकाता	समीक बंद्योपाध्याय का व्याख्यान
15-16 मार्च 2018	आइजोल	अखिल भारतीय लेखक सम्मिलन
17 मार्च 2018	आइजोल	संगोष्ठी : बैते और उसकी भाषाएँ
17 मार्च 2018	कोकराझार	कथासंधि : गोबिंद बसुमतारी
18-19 मार्च 2018	कोकराझार	बोडो लेखक महोत्सव
19 मार्च 2018	कोकराझार	अखिल भारतीय लेखक सम्मिलन
20 मार्च 2018	धूपधारा, असम	लोक : विविध स्वर
20 मार्च 2018	धूपधारा	मुलाक़ात
27-28 मार्च 2018	गुड़गाँव	चर्चा-सह-कार्यशाला
7-8 अप्रैल 2018	कोलकाता	कृतिवास उत्सव
14 अप्रैल 2018	नई दिल्ली	साहित्य मंच
16-27 अप्रैल 2018	नई दिल्ली, मुंबई, बेंगळूरु	स्वच्छता पखवाड़ा
23 अप्रैल 2018	बेंगळूरु	साहित्य मंच

प्रधान कार्यालय
रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग
नई दिल्ली 110 001
दूरभाष : 011-23386626/27/28
फ़ैक्स : 091-11-23382428
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in

विक्रय कार्यालय
स्वाति, मंदिर मार्ग
नई दिल्ली 110 001
दूरभाष : 011-23745297, 23364204
फ़ैस : 091-11-23364207
ई-मेल : sales@sahitya-akademi.gov.in

मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय
172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग
दादर, मुंबई 400 014
दूरभाष : 022-24135744, 24131948
फ़ैक्स : 091-22-24147650
ई-मेल : rs.rom@sahitya-akademi.gov.in

कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय
4, डी.एल. ख़ान मार्ग
कोलकाता 700 025
दूरभाष : 033-24191683, 24191705/06
फ़ैक्स : 091-33-24191684
ई-मेल : rs. rok@sahitya-akademi.gov.in

बेंगळूरु क्षेत्रीय कार्यालय
सेंट्रल कॉलेज परिसर
डॉ बी.आर. आंबेडकर वीथी, बेंगळूरु 560001
दूरभाष : 080-22245152
फ़ैक्स : 091-81-22121932
ई-मेल : rs. rob@sahitya-akademi.gov.in

चेन्नै कार्यालय
मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग (द्वितीय तल), 443 (304)
अन्नासलाइ, तेनामपेट, चेन्नै 600018
दूरभाष : 044-24311741, 24354815
फ़ैक्स : 091-44-24311741
ई-मेल : chennaioffice@sahitya-akademi.gov.in

वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in

अनुपम तिवारी द्वारा संपादित तथा के. श्रीनिवासराव, सचिव
साहित्य अकादेमी, रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110001 द्वारा प्रकाशित
एवं विकास कंप्यूटर एंड प्रिंटर्स, दिल्ली द्वारा मुद्रित